जर्मन जनवादी गणराज्य

सफलता के दस वर्ष

सोसाइटी फार कल्चरल रिलेशन्स

शुभ कामनाएं

उप-राष्ट्रपति
भारत, नई दिल्ली
१३ नवम्बर, १९५९

श्री अर्जुन जगोता
जनरल सेक्रेटरी
सोसायटी फॉर कलचरल रिलेशन्स
पो० बॉ० नं० १२५५, दिल्ली-६

प्रिय श्री जगोता,

८ नवम्बर के आपके पत्र के लिए धन्यवाद।
पारस्परिक सद्‌भावना के लिए कोई भी प्रयत्न सराहनीय है।
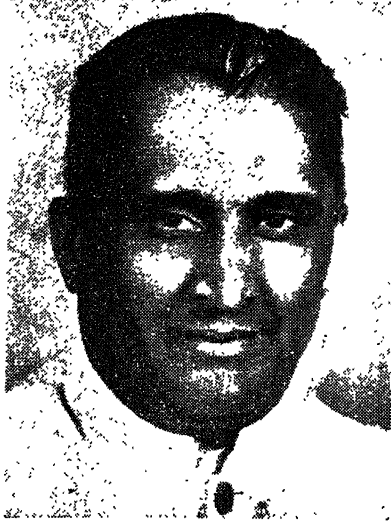
हृदय से आपका
एस. राधाकृष्णन

खाद्य और कृषि मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली
२३ नवम्बर, १९५९

प्रिय श्री जगोता

आपके १२ नवम्बर के पत्र के लिए धन्यवाद। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आप पिछले अगस्त में पूर्वी जर्मनी की यात्रा कर आये हैं। पूर्वी जर्मनी और भारत की जनता के बीच सद्भावना बढ़ाने के आपके प्रयत्न में मैं पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ।

हृदय से आपका
एस. के. पाटिल

विधान सौध, बंगलौर १.
१८ नवम्बर, १९५९

प्रिय श्री अर्जुनदेव जगोता,

आपका १२ नवम्बर का पत्र और पूर्वी जर्मनी की आपकी यात्रा की बातें जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। मेरा विश्वास है कि पूर्वी जर्मनी की यात्रा और वहां की विभिन्न संस्थाओं को देखने तथा विभिन्न लोगों की जनता के सम्पर्क से आपने बहुत उपयोगी जानकारी हासिल की होगी। मेरी इच्छा है कि आपकी जानकारी और अनुभव से हमारे देशवासी परिचित हों। मैं आपके प्रयत्नों में पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ।

हृदय से आपका
बी. डी. जत्ती
(मुख्य मंत्री, मैसूर राज्य)

विदेशों के साथ सांस्कृतिक सम्बंधों की सोसायटी

थालमान्न प्लाज़ ८-९
बर्लिन डब्ल्यू–८
२ नवम्बर, १९५९

प्रिय श्री जगोता,

मैं जर्मन जनवादी गणराज्य सम्बंधी पुस्तिका प्रकाशित करने के लिए **सोसाइटी फार कलचरल रिलेशंस** की पहलकदमी का स्वागत करता हूँ।

इस अवसर पर मैं यह आशा व्यक्त करना चाहता हूँ कि हमारे देश की यात्रा के समय आपने जो कुछ देखा है, उससे आपके देशवासियों को ज. ज. ग. के सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास की एक झांकी मिल जायेगी।

मैं आपके प्रयत्न में भारी सफलताओं की कामना करता हूँ। इस पुस्तिका को अनेकों लोग पढ़ें और साथ ही यह भारत और जर्मन जनवादी गणराज्य के बीच मैत्री को और मजबूत बनाने में सहायक बने।

धन्यवाद के साथ,

आपका विश्वासी

मेयेर

श्री ए. डी. जगोता
जनरल सेक्रेटरी
सोसाइटी फार कलचरल रिलेशंस
पो० बा० न० १२५५, दिल्ली–६

लेख के क्रम

भारत के प्रति गहरा प्यार

अर्जुनदेव जगोता

गत अगस्त में वियना में हुए युवकों और विद्यार्थियों के सप्तम विश्व समारोह में भाग लेने के बाद मुझे जर्मन जनवादी गणराज्य को अपनी आंखों से देखने का अवसर मिला। ऐसे भी पिछले कई सालों से इस भूमि को देखने की मेरी लालसा तीव्र हो रही थी। मेरे इस आकर्षण का कारण यह था कि द्वितीय महायुद्ध में इतनी बर्बादी के बाद भी वह अपने युद्ध के जख्मों को भर कर विश्व शांति और समाजवादी निर्माण के पथ पर बढ़ रहा है।

मैं जर्मन जनवादी गणराज्य के युवक संगठन के निमंत्रण पर वहां गया था, अतः वहां के नवयुवकों और नवयुवतियों से मिलने-जुलने का मुझे विशेष रूप से अवसर मिला। लेकिन मैंने वहां जीवन के दूसरे क्षेत्रों को भी देखा। वहां के कल-कारखानों में गया, सामूहिक और राज्य फार्मों में जाकर किसानों से बातें की, सांस्कृतिक समारोह में भाग लिया और वहां के अनेक लेखकों से से मेरी मुलाकातें हुईं जिनमें से कुछ के लेख इस पुस्तिका में मौजूद हैं।

जहां कहीं भी मैं गया, मेरा ऐसा हार्दिक स्वागत हुआ जिसे शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि दरअसल मेरा नहीं, बल्कि मेरे देश का, हमारे नेता पंडित नहरू के नेतृत्व में मेरा देश जिस बुलन्दी से विश्व शांति की नीति पर चल रहा है, उसका स्वागत हो रहा है। "भारतीय" नाम मानो उनके लिए एक जादू के समान था।

राजधानी बर्लिन

ड्रेसडेन, आदि कुछ नगरों को देखने के बाद मैं बर्लिन पहुँचा। यहाँ मैं विदेशों से सांस्कृतिक सम्बन्ध रखने वाली सोसाइटी का अतिथि था।

बर्लिन दो भागों में बंटा है—आधा समाजवादी दुनिया में और आधा अमरीकी साम्राज्यवाद के प्रभाव में। पर वह मिला हुआ है। जमीन के नीचे नीचे एक रेल एक ही चक्कर में पूरे शहर के दोनों भागों को जोड़ती है। कोई कहीं भी बैठ कर किसी भी हिस्से में जा सकता है। बर्लिन नया बन गया है—पर दूसरे विश्व युद्ध की भयानक चोटों के निशान अब भी उसके चेहरे पर बाकी हैं। रीशटाग (पार्लमेंट) की प्रसिद्ध इमारत अब भी जली हुई भग्न खड़ी है, मानो लोगों को युद्ध के खिलाफ चेतावनी दे रही हो।

बाख़ और गेटे का नगर

वहीं से १३ अगस्त को कार से हम लाइपजिग के लिए रवाना हो गये। कार से जाने से फायदा हुआ। हम देख सके कि शांतिपूर्ण निर्माण का काम कितने व्यापक पैमाने पर सर्वत्र हो रहा है।

जैसा कि सब लोग जानते हैं, जर्मन जनवादी गणराज्य के खिलाफ पश्चिमी जर्मनी की ओर से शीत युद्ध निरन्तर चलता रहता है। ऐसी हालत में भी सम्पूर्ण देश का बिना किसी भय या घबड़ाहट के शांतिपूर्ण निर्माण के काम में लगा रहना मेरे लिए बड़ी अचरज की चीज थी।

लाइपजिग जर्मनी का ऐतिहासिक नगर है। प्रसिद्ध संगीतकार बाख यहां रहे थे और यहीं उनकी मृत्यु हुई थी। महाकवि गेटे ने अपने महाकाव्य 'फॉस्ट' की परिकल्पना यहीं की थी। और दिमित्रोव का इतिहास प्रसिद्ध वह मुकदमा भी यहीं की अदालत में हुआ था जिसमें स्वयं अभियुक्त होते हुए भी उन्होंने हिटलर, गोरिंग ओर गोयबेल्स को दुनिया के जनमत के दरबार में अपराधी साबित कर दिया था।

लाइपजिग हम रात को लगभग एक बजे पहुँचे। मेरे साथ एक दुभाषिया थी। उस वक्त भी वहां खूब चहल-पहल थी। हमने कार छोड़ दी और पैदल ही घूमने की ठानी। अजब ऐश्वर्यपूर्ण दृश्य था। चारो तरफ प्रकाश छाया हुआ था। लड़के-लड़कियों की टोलियां हाथ में हाथ डाले स्वच्छंदता से घूम रही थीं। हल्की रिम-झिम हो रही थी।

थोड़ी ही देर में हम लोग घिर गये। मेरी दुभाषिया कुमारी उर्सुला ने मुझे बताया कि वे मेरा पता मांग रहे हैं। पता लिख दिया—न जाने कितनी कापियों पर। थोड़ी देर में एक लड़के ने मेरा हाथ पकड़ लिया और वे सब झे घसीटने लगे। पता चला कि वे मुझे किसी होटल में ले जाना चाहते हैं।

शिक्षाप्रद और मनोरंजक फिल्म
का एक मनोहर दृश्य

होटल से बाहर आकर बड़ी कठिनाई से मैंने उनसे विदा ली। वे छोड़ना नहीं चाहते थे। अपने होटल लौटा तो दो और भारतीय मिल गये। हमारी सरकार ने उन्हें लाइपजिग के खेल-कूद समारोह में भाग लेने के लिए भेजा था। उनसे मिलकर बहुत खुशी हुई। वे भी जर्मनों के स्नेह-सत्कार से अभिभूत थे। मैंने पूछा, "समारोह कैसा है ?" उन्होंने कहा, "इतना सुन्दर और संगठित समारोह जीवन में कभी नहीं देखा था।" उन्होंने बताया कि उसमें प्रदर्शित किये जाने वाले कार्यक्रम इतने अच्छे थे कि "आज लगातार तालियां ही बजती रहीं। देख तो सकते थे, किन्तु सुन कुछ नहीं सकते थे। लोगों की खुशी उबली पड़ रही थी।"

होठों पर गीत और पैरों में नृत्य

फिर सुबह हुई। मेरे लिए लाइपजिग में आज पहला दिन था, किन्तु समारोह का यह अन्तिम दिन था।

सुबह ही हम समारोह के स्टैडियम देखने गये। उसकी लम्बाई-चौड़ाई विशाल थी। १ लाख २० हजार व्यक्ति उसमें बैठ सकते थे। ५० हजार युवक और युवतियां—जिनके चेहरे स्वास्थ्य से दमकते थे—इसके अन्दर पिछले ६ दिनों से खेल-कूद तथा जिमनेशियम के कार्यक्रम दिखला रहे थे। उनमें २४ हजार लड़कियां थीं और २६ हजार हृष्ट-पुष्ट नौजवान लड़के।

पर हृष्ट-पुष्ट तो, मुझे एकदम याद आया, हिटलर के नौजवान भी थे। एक धक्का सा लगा। तभी अनुभव किया—जो कुछ पिछले चंद दिनों में देखा था, उसने बताया कि ये लोग सिर्फ शरीर से ही हृष्ट-पुष्ट नहीं हैं, बल्कि इनके मन और दिमाग भी असाधारण रूप से स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट हैं। वे युद्ध के नहीं, शांति के पहरुए हैं। और फिर खयाल आया कि हिटलर के जमाने में ये लड़कियां यहां कैसे आ पातीं? उनकी जगह तो उसने "चौके में" बतायी थी—जर्मनी के युद्ध सैनिकों को पैदा करने का साधन बताया था।

वहां के लोगों ने बताया कि इस विशाल और सुन्दर स्टैडियम को ५ वर्ष पहले खिलाड़ियों ने खुद अपने हाथों से ५-६ महीने में बना लिया था।

आज बारिश बढ़ गयी थी। उसकी वजह से सुबह का कार्यक्रम खतम कर दिया गया। मुझे निराशा हुई। पर अपराजेय जर्मन युवक ऋतु के 'मूड' के सामने कैसे झुक सकते थे? उन्होंने तै किया कि वे प्रदर्शन निकालेंगे।

घण्टों पहले से ही सड़कों, बाजारों में अथाह जन-समूह भर गया। मैं अगर "विदेशी अतिथि" न होता तो अन्दर भी न जा पाता।

२ बजे से प्रदर्शन–मार्च शुरू हुआ। आगे-आगे झंडों का उमड़ता-बढ़ता रंग-बिरंगा सागर था। बैंड और तरह–तरह के बाजों पर मादक धुनें बज रही थीं। नवयुवक और नवयुवतियां खेल के कपड़े पहने हुए चल रहे थे। उनके ओठों पर स्वतंत्रता, शांति, भाईचारे, सुख और प्रेम के नारे तथा मधुर गीत थे। पैरों में उनके चंचल मनोरम नृत्य थे। अद्भुत आल्हाद था; अद्भुत उन्माद था। यहां न बैर था, न कलुष था, न 'शीत' अथवा 'ऊष्ण' युद्ध की कहीं आवाजें थीं। लाइपजिग की सड़कों पर बह रही थी केवल मानव-प्रेम की स्वच्छ–सलिल गंगा।

उनमें से कुछ मुझे देख लेते। मेरे साथ अब एक और भारतीय मित्र श्री चटर्जी हो गये थे। शायद भारतीय समझकर वे हम पर फूलों की वर्षा करते जाते। कोई-कोई दौड़कर आता और फूल हमारे हाथों में दे जाता।

पांच घण्टे यों ही बीत गये। पर थकान नहीं थी। प्रदर्शन में जब हजारों लड़के-लड़कियां पश्चिमी जर्मनी के दिखे, तब तो जैसे लोगों की तालियों की आवाजों से आकाश ही कांप उठा।

रात घिर आयी थी। लोग घरों को लौटने लगे थे। किन्तु युवावस्था की जीवन की चाह का कहां अंत है? लड़के-लड़कियां अब भी नाच रहे थे।

एक ऐसे ही समूह ने हमें घेर लिया और कहने लगा, "नाचो!" कभी नाचा नहीं था—पर नाच तो मन से सम्बन्ध रखता है। हम भी शामिल हो गये। हाथ-पैर चलाने लगे। नाचने लगे, न जाने कब तक नाचते रहे।

स्त्रियों की कायापलट

हिटलर के शासन काल में वहां स्त्रियों के लिए क्या कर्तव्य निर्धारित किये गये थे, इसका उल्लेख मैं कर चुका हूँ। लेकिन समाजवादी शासन में अब स्त्रियों की स्थिति में बुनियादी परिवर्तन हो गया है। अब जीवन के सभी क्षेत्रों में उन्हें पुरुषों के समान ही अधिकार है। वे अपनी इच्छा के मुताबिक कोई भी धंधा सीख सकती हैं। अतः अध्यापिका, ट्रैक्टर चालिका, मशीन चालिका, डॉक्टर, प्रयोगशाला सहायिका के रूप में आपसे उनकी मुलाकात हो सकती है। और मेरी मुलाकात ऐसी अनेक स्त्रियों से हुई भी।

उन्हें पुरुषों ही के बराबर वेतन मिलते हैं। कारखानों और दफ्तरों में उनके अलग विश्राम कक्ष बने हैं। बड़ी संख्या में धोबीखाने और कैंटीन खोल कर, बच्चों के लिए शिशु-शालाएं, बालोद्यान खोल कर घर-गृहस्थी के उनके बोझ को हलका करने में भारी सुविधाएं प्रदान की गयी हैं।

मजदूरों और किसानों की लड़कियां अब वहां कालेजों और विश्व विद्यालयों में इतिहास, साहित्य, दर्शन और विज्ञान पढ़ने लगी हैं। काम करने वाली स्त्रियों की पढ़ाई के लिए सायंकालीन कालेजों की व्यवस्था है।

मजदूरों की स्थिति

मैं मजदूरों के रहन-सहन के बारे में भी जानने को उत्सुक था। पता चला कि यहां उनकी तन्दुरुस्ती का बहुत खयाल किया जाता है। इसके लिए

ट्रेड यूनियनों की ओर से छुट्टियां बिताने के लिए अवकाश गृह खोले गये हैं। वहां २ हफ्ते की छुट्टी बिताने पर कुल ३५ रुपये खर्च आते हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक बीमा, डाक्टरी इलाज, हर नागरिक के लिए मुफ्त हैं।

यहां उद्योग-धन्धों के प्रबन्ध में मजदूरों का पूरा-पूरा दखल होता है। उत्पादन योजनाओं को पूरा करने, पैदावार बढ़ाने, लागत घटाने, सामग्री सप्लाई करने की जिम्मेदारियां स्वयं मजदूरों द्वारा तय की जाती हैं।

यहाँ मजदूरों का सामाजिक स्तर बहुत ऊंचा है। यहां के अनेकों मजदूर पार्लमिंट के सदस्य हैं। संक्षेप में पैदावार, के क्षेत्र में हों या राजनीति के क्षेत्र में, सब जगह उनका दखल और आदर है।

सुखी सम्पन्न घर

मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं इन मजदूरों के घरों को देखूं। एक दिन बिना बताये-जताये मैं निकल पड़ा। मैंने मालूम किया कि सामने जो घर दीखता है, वह किसी मजदूर का है। पहली मुश्किल तो यहां यह होती है कि मालूम ही नहीं हो पाता कि कौन मजदूर है और कौन नहीं। वह एक कारखाने में काम करता है। दरवाजे पर घंटी लगी थी। मैंने बटन दबाया। दरवाजा खुला। मैंने कहा: "मैं भारतीय हूँ।" मुस्कराते हुए वह मुझे अन्दर लिवा ले गया। बोला: "मैं 'गुन्तूर' हूं।" यह उसका नाम था। मैंने देखा श्री गुन्तूर के फ्लैट में दो बड़े-बड़े कमरे थे। खुले हवादार और सजे हुए कमरों की फर्श पर दरी व सुन्दर गलीचा बिछा था। बैठने वाले कमरे में सोफे के अलावा तीन या चार सुन्दर कुर्सियां, एक गोल मेज, टेलीविजन रखे हुए थे। दीवारों पर बहुत ही सुन्दर ढंग से कांच के कामदार बर्तनों में बेले सजायी गयी थीं। श्री गुन्तूर ने खूब आवभगत की। उन्होंने फिर आने को कहा था, मगर मैं न जा सका। आज भी मुझे अपनी और श्री गुन्तूर की मुलाकात याद है।

मैं जर्मन जनवादी गणराज्य को जितना भी देख पाया, उससे बहुत प्रभावित हुआ। वहां से हम अपने देश में बहुत सी उपयोगी चीजें मंगा सकते हैं। अपनी चीजें वहाँ भेज सकते हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान आज के युग में पारस्परिक सद्भावना के लिए एकदम आवश्यक हो गया है। इससे दोनों ही देशों को पारस्परिक लाभ होगा और दोनों देशों की जनता के बीच मैत्री की भावना बढ़ेगी। इसी आकांक्षा को लेकर मैं अपने देशवासियों को अपना यह अनुभव बता रहा हूं।

सद्भावना की कड़ी

भारत और जर्मन जनवादी गणराज्य के मैत्रीपूर्ण संबंधों का सिंहावलोकन

प्रधान मंत्री ओटो ग्रोटेवाल के नेतृत्व में पिछले वर्ष जनवरी में जर्मन जनवादी गणराज्य का एक सरकारी प्रतिनिधि मंडल भारत आया था। भारत में हुए उसके मैत्रीपूर्ण स्वागत को केवल भारत का आतिथ्य-सत्कार नहीं समझना चाहिए। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि दोनों देश शांति की स्थापना और "पंचशील" की नीति पर चलने में समान दिलचस्पी रखते हैं।

ज. ज. ग. के सरकारी प्रतिनिधि-मंडल की भारत यात्रा ने यह भी साबित कर दिया कि ज. ज. ग. एक यथार्थ है। एशिया के शांतिप्रिय देशों में इस यात्रा का जो स्वागत हुआ, उसने यह बता दिया कि इन देशों में ज. ज. ग. की नीति को सही सही-समझा गया है।

जनता यह जानती है कि ज. ज. ग. खुलकर पंचशील की हिमायत करता है, आक्रमण और उपनिवेशवाद का विरोध करता है। एशियाई और अफ्रीकी जनता की राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता की लड़ाई का वह समर्थन करता है। समानता और पारस्परिक लाभ के आधार पर इन देशों की जनता के साथ ज. ज. ग. का वैदेशिक व्यापार न सिर्फ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण रूप है, बल्कि इससे भी बढ़कर इस स्वतंत्रता संघर्ष का एक आवश्यक तत्व है और अपने गुणों के कारण वह पारस्परिक सम्बन्धों को बढ़ाने का एक विशेष आधार है।

भारत और ज. ज. ग. के बीच का व्यापार सम्बन्ध अभी एकदम नया है। १९५३ के पहले तक यह व्यापार नाममात्र को ही हुआ करता था। लेकिन अक्तूबर १९५४ में पहला व्यापार समझौता होने के बाद से यह बहुत

अच्छी तरह आगे बढ़ा है। १९५५ में २ करोड़ २० लाख का व्यापार हुआ था। १९५८ में इसे बढ़ाकर ७ करोड़ ५५ लाख का कर दिया गया।

यह व्यापार न सिर्फ परिमाण में, बल्कि अपने गुण में भी आगे बढ़ा है। १९५६ में जब विदेशी मुद्रा को बचाने के लिए भारत में आयात पर बंदिशें लगायी गयीं, तो ज. ज. ग. ने तुरन्त एक पूरक समझौता किया और ऐलान किया कि अपने निर्यात मालों का मूल्य वह भारतीय रुपयों में लेने के लिए तैयार है। इन रुपयों का उपयोग उसने भारत से अपने यहां माल मंगाने में किया। १९५८ में बर्लिन में फिर एक समझौता हुआ जिसके जरिए दोनों देश सहमत हुए कि पूरे माल का विनिमय केवल रुपयों के आधार पर हो। भारत के सामने विदेशी मुद्रा का जो घोर संकट था, उसमें कारगर तरीके से मदद देने का यह एक नया उदाहरण था।

इसी तरह भारत के हित में, समाजवादी विश्वमंडी के अन्य देशों से आने वाले अधिकतर मालों का भुगतान भी भारतीय रुपयों के आधार पर मालों के रूप में ही किया जाता है।

भारत ने जब "आवश्यक मालों" के आयात करने की नीति स्वीकार की, तो उसके मुताबिक ज. ज. ग. से आनेवाला माल भारत के लिए सहायक साबित हुआ। १९५८ में ज. ज. ग. से भारत में जितना माल आया, उसमें कच्चे मालों और अर्ध-तैयार मालों का भाग ५२.६ प्रतिशत और हल्के उपभोक्ता मालों का भाग १०.६ प्रतिशत था। भारत ने ज. ज. ग. से जो माल मंगाया, उसमें नाइट्रोजन और पोटासियम खादों तथा विश्व प्रसिद्ध आगफा ओल्फन फिल्म फैक्टरी में बनी फिल्मों और फोटोग्राफी के सामानों का भाग महत्वपूर्ण था।

लेकिन ज. ज. ग. की सूती मशीनों, मशीनी औजारों और पोलीग्राफिक मशीनों की शोहरत भी भारत में फैल गयी है।

हल्के उद्योगों के क्षेत्र में कागज और रेयन सूतों के बाद प्रसिद्ध जेना-स्कोट कारखाने के प्रयोगशाला सीसे का उल्लेख किया जा सकता है। ज. ज. ग. अपने यहां मंगाये जाने वाले भारतीय उत्पादनों को सीधे भारत में ही खरीद लेता है, अतः किसी योरोपीय मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं होती है। भारतीय सरकार की इच्छा के मुताबिक ऐसी खरीद में तैयार मालों के भाग को निरन्तर बढ़ाया जा रहा है। लिपजिग में भारतीय हस्तशिल्प की वस्तुओं की खरीद एक परम्परा बन गयी है। हमारा सूती उद्योग काफी विकसित है, फिर भी ज. ज. ग. तैयार भारतीय सूती वस्तुएं अपने यहां मंगाता
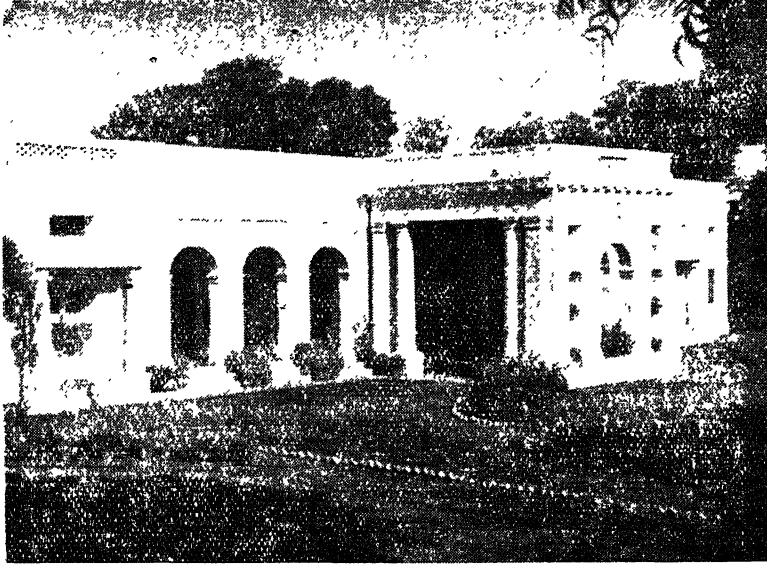
जर्मन जनवादी गणराज्य का भारत स्थित व्यापार दूतावास का कार्यालय भवन जो २३ कर्जन रोड पर है

है। ज. ज. ग. में संश्लिष्ट तन्तुओं के पतले पैकिंग प्रसाधन मौजूद हैं, फिर भी १९५९ में उसने पहली बार भारत से जूट के पतले पैकिंग प्रसाधन बड़ी मात्रा में मंगाया है।

ज. ज. ग. से लाखों जोड़े जूतों का एक आर्डर भारत को दिया गया था। पर उसे आंशिक रूप में ही पूरा किया जा सका, क्योंकि भारतीय बूट उत्पादकों की उत्पादन क्षमता काफी नहीं थी। अभी भारतीय बूटों का निर्यात दायरा सीमित ही है। फिर भी ज. ज. ग. के जूता व्यापार संगठन ने ऐलान किया है कि वह दोनों देशों के उत्पादकों के बीच प्राविधिक अनुभवों के आदान-प्रदान की योजना बनाने के लिए तैयार है। इससे आगे इस व्यापार के लिए व्यापक आधार तैयार हो सकता है।

इसके अलावा ज. ज. ग. भारत से चाय, कॉफी, काजू, पीपर, वनस्पति तेल, ऊन, लोहा और मैंगनीज ओर तथा अबरख खरीदता है। भारत के कुल निर्यात में ज. ज. ग. का भाग कॉफी में २५ प्रतिशत, अबरख में ५ प्रतिशत, वनस्पति तैल में ४ प्रतिशत और पीपर में लगभग ६ प्रतिशत था।

यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि दोनों देशों के बीच मालों के कुल विनिमय का परिणाम १९५९ में और ज्यादा बढ गया है। ज. ज. ग. में भारतीय मालों की मांग वर्तमान आयात से अभी ही कई गुना अधिक बढ़ गयी है। ज. ज. ग. ने अपने यहां के राष्ट्रीय अर्थतन्त्र को इस हद तक विकसित करने का निर्णय किया है जिससे कि मेहनतकश लोगों की मुख्य खाद्य सामग्री और उपभोक्ता मालों की फी व्यक्ति खपत कई देशों से आगे बढ़ जायेगी। फलस्वरूप ज. ज. ग. में आयात की संभावना और बढ़ जायगी।

इनके अलावा, १९६१ तक आबादी के लिए कॉफी की सप्लाई तिगुनी और काजू तथा अन्य सभी ग्रीष्मकालीन फलों की सप्लाई दुगुनी हो जायेगी।

ज. ज. ग. में कृषि के विकास के फलस्वरूप वानस्पतिक और पशु के दुग्धीय खाद्य पदार्थों की आवश्यकता बढ़ जायेगी और इसमे सभी तरह की तैलीय खलियों, आदि के आयात की संभावना वहां काफी बढ जायेगी।

ज. ज. ग. में औद्योगिक और कृषि उत्पादन के दिनों-दिन बढ़ते जाने के कारण पैकिंग के लिए जूट के बोरों और रेशों की जरूरत बढ़ती जायेगी। अतः भारत से उनकी खरीद के भी बढ़ने की संभावना है। इसी तरह कपड़ा उद्योग में जटा-जूट और उनके उत्पादनों, चमड़े, खालों, और पशुओं के रोओं तथा रसायन उद्योग में तैलीय तत्वों, रेंड़ी के तेल, चमड़ा आदि के आयात की बड़ी सम्भावनाएं हैं।

यदि भारत इन चीजों को बड़ी मात्रा में देता है, तो इसके बदले में वह अपने राष्ट्रीय उद्योगों के विकास के लिए ज. ज. ग. से बड़े परिमाण में आवश्यक माल मंगा सकता है। उदाहरण के लिए, ज. ज. ग. के मशीनी औजारों के प्राविधिक स्तर की धाक दुनिया भर में छायी हुई है। जेस्स-जेना के आप्टिकल उत्पादनों के यथातथ विश्व प्रसिद्ध हैं और वैज्ञानिकों के क्षेत्र में उसे बहुत पसन्द किया जाता है। आगफा के फिल्म प्रसाधन, रसायन, पोलिग्राफिक मशीनें, भारी मशीनें और टेक्सटाइल मशीनें, प्रयोगशालाओं के लिए जेना के शीशे, विद्युत औजार और मशीनें—ज. ज. ग. से निर्यात होने वाले मालों की लम्बी सूची में से ये केवल कुछ नाम हैं। भारत को इन मालों में दिलचस्पी हो सकती है और इसमें सन्देह नहीं कि इन्हें अपने यहां मंगा कर भारत दोनों देशों के बीच व्यापार को उपयोगी रूप में बहुत बढ़ा सकता है।

ऐसे व्यापार से दोनों देशों का पारस्परिक आर्थिक लाभ होता है, दोनों देशों की जनता के बीच सद्भाव बढ़ता है और शांति की हिफाजत में कारगर सहायता मिलती है।

व्यापार की दुनिया में हमारी साख

हेनरीश राऊ

मंत्रि-परिषद के उपाध्यक्ष और वैदेशिक एवं घरेलू व्यापार मंत्री

जर्मन जनवादी गणराज्य की स्थापना को दस वर्ष हुए। इस छोटे काल में हमारे देश ने एक नयी, सच्ची जनवादी राज्य व्यवस्था और समाजवादी सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करने मे बहुत ही सफलता प्राप्त की है। दुनिया भर में हमारी इन सफलताओं को स्वीकार किया जाता है। हमारे देश से राजनीतिक व व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करके समाजवादी और गैर-समाजवादी देशों ने हमारी सफलताओं के प्रति अपनी सराहना प्रकट की है। विदेशों से हमारा व्यापार बढ़ा है जिसमें लिपजिग के मेलों ने बहुत ही मदद की है।

हमारी वैदेशिक नीति शान्तिपूर्ण है और हम अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को शान्तिपूर्ण ढंग से वार्तालाप के जरिए सुलझाने के लिए सुझाव देते रहते हैं। इस वजह से विभिन्न राज्यों की जनता के बीच पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करने में हमारे देश की भूमिका महत्वपूर्ण है। हम इस भूमिका को इसलिए पूरा कर पाते हैं कि हमारे उद्योगों की उत्पादन शक्ति बहुत अधिक है और हमने आर्थिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक क्षेत्र मेंभारी सफलताएं प्राप्त की हैं।

जर्मन ज. ग. योरप के राज्यों में औद्योगिक उत्पादन के लिहाज से पांचवां स्थान रखता है। हमारे देश में आर्थिक व उत्पादन क्षेत्र में सभी वैसी महत्वपूर्ण शाखाएं मौजूद हैं, जैसी आधुनिक व यन्त्रों की दृष्टि से उन्नत देश में होनी चाहिए। समाजवादी विश्व-मण्डी में हमारा देश हर प्रकार की मशीनों व यन्त्रों के निर्यात में सर्व-प्रथम है। इंजीनियरिंग उद्योग की कितनी ही चीजों

के उत्पादन में हमारा स्थान सबसे आगे है। मशीनों के पुर्जे, सूती कपड़े बनाने की मशीनें, सीमेंट बनाने के कारखाने, छोटे-छोटे पुर्जे, चश्मों के शीशे, दफ्तरी मशीनें, कैमरे, बिजली के सामान, आरमेचर आदि के उत्पादन में हमारा देश बहुत बढ़ा हुआ है। अमरीका, ब्रिटेन और पश्चिमी जर्मनी के बाद मशीनों के निर्यात में हमारा ही नम्बर आता है—इस क्षेत्र में हमें दुनिया में चौथा स्थान प्राप्त है। १९५९ के लिपजिग मेले में हमारे यहां की मैकेनिकल इंजीनियरिंग की दक्षता से प्रभावित होकर अमरीकी पत्रिका "अमेरिकन मैकेनिस्ट" ने लिखा था कि ढलाई की मशीनों का उत्पादन ब्रिटेन की अपेक्षा अमरीका में ज्यादा होता है। इसी पत्रिका ने लिखा था कि मशीनों के यन्त्र के उत्पादन में जर्मन ज. ज. ग. विश्व-मण्डी में थोड़े समय के भीतर ही एक शक्ति बन गया है और वहां की मशीनें बहुत अच्छी होती हैं।

हम इस बात पर भी गर्व करते हैं कि हमारे रासायिनिक उद्योग बहुत ही उच्च कोटि के हैं। रासायिनिक पदार्थों के कुल उत्पादन में हमारा नम्बर दुनिया में सातवां है और प्रति व्यक्ति उत्पादन देखा जाय तो अमरीका के बाद हमारा ही स्थान है। इन पदार्थों के निर्यात में सोवियत संघ के बाद समाजवादी देशों में हमारी ही गिनती है।

हलके उद्योगों के क्षेत्र में भी जर्मन जनवादी गणराज्य ने संख्यात्मक व गुणात्मक दृष्टि से बड़ी प्रगति की है। इस सिलसिले में कपड़ा उद्योग का उल्लेख आवश्यक है। कपड़े के उत्पादन में हमारा नम्बर तीसरा है। हमारे यहां के शीशे, लाख, लकड़ी के सामान के उद्योग भी बहुत उन्नत हैं और संगीत के साजों को बनाने में हमारा स्थान बहुत ऊंचा है। इन उद्योगों का तैयार माल हमारे देश से बड़ी संख्या में बाहर जाता है और हमारे माल को दुनिया की हर मण्डी में मान्यता प्राप्त है।

हमारे उद्योगों की उत्पादन क्षमता हमारी राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था व व्यापारिक ढांचे के उन्नतशील होने का प्रमाण है। १९५० से १९५८ तक हमारा विदेशी व्यापार तेजी से बढ़ा। १९४९ में ज. ज. ग. की स्थापना के पश्चात समाजवादी निर्माण के ढांचे के अन्तर्गत हमारे देश की मेहनतकश जनता ने जो आर्थिक, यान्त्रिक और वैज्ञानिक सफलता प्राप्त की, वह इस बढ़े हुए वैदेशिक व्यापार से व्यक्त होती है।

आगामी सात वर्षों में, यानी १९६५ तक के आर्थिक विकास व विदेशी व्यापार की उन्नति के लिए भी मार्ग प्रशस्त हो गया है। इन सात वर्षों में १९५८ की अपेक्षा हमारा आयात व निर्यात व्यापार ७० प्रतिशत बढ़ जायगा,

१९५८ में यूगोस्लाविया में हुई विश्व कृषि प्रदर्शनी में ज. ज. ग. के खुले मंडप का सुहावना दृश्य

क्योंकि हमारी आर्थिक शक्ति बराबर बढ़ती रहेगी और हमारे उत्पादन व उपभोग की मांगें बढ़ती रहेंगी। उद्योगों व व्यापार में १९६०-६१ में विशेष रूप से प्रगति होने की आशा है।

ज. ज. ग. के आर्थिक विकास के लिए जो सप्त-वर्षीय योजना तैयार की गयी है, उसके लिए कच्चे माल, उपभोग की औद्योगिक वस्तुओं व आराम के सामान और गर्म देशों से फलों का आयात बहुत जरूरी है और कच्चे लोहे, लोहे की चादरों, सैल्यूलोज़, पैट्रोलियम, कपास, ऊन, कच्चा चमड़ा, लकड़ी आदि जैसे महत्वपूर्ण कच्चे व अर्ध–औद्योगिक मालों का आयात १९५८ की अपेक्षा १९६५ में दो से तीन गुना तक बढ़ जायगा और गर्म देशों से फल, कोको, काफी, आदि का आयात तीन से चार गुना तक बढ़ जायगा।

इन चीजों से पता चलता है कि ज. ज. ग. के व्यवस्थित आर्थिक विकास की वजह से हमारे साथ व्यापारिक साझेदारी करने का सभी को मौका मिलेगा।

यह सही है कि हमारे वैदेशिक व्यापार का ज्यादा भाग समाजवादी देशों में ही जायगा और ७३ से ७५ प्रतिशत तक विदेशी व्यापार सप्तवर्षीय योजना के अन्तर्गत समाजवादी देशों से ही होगा। समाजवादी देशों के साथ माल के आदान-प्रदान के लिए जो दीर्घ-कालीन समझौते हुए हैं, उनकी वजह से हमें वह सभी कच्चा माल, अर्ध-तैयार माल और खाने का सामान मिल जायगा, जो हमारे यहां पैदा नहीं होता और बदले में हम अपने उद्योगों का तैयार माल इन देशों में भेज सकेंगे। इस वजह से ज. ज. ग. की आर्थिक व्यवस्था में एक प्रकार की स्थिरता आ जायगी जो तेजी से और लगातार आर्थिक विकास के लिए अत्यन्त जरूरी है।

हम गैर-समाजवादी देशों से भी व्यवस्थित ढंग से प्रति वर्ष व्यापार बढ़ाते जा रहे हैं। इस सिलसिले में स्वतन्त्र राष्ट्रवादी राज्यों व एशिया–अफ्रीका व दक्षिणी अमरीका के देशों के साथ व्यापारिक संबन्ध मजबूत बनाने तथा उसे बढ़ाने पर विशेष रूप से जोर दिया जा रहा है। हमारा राज्य इन देशों के साथ ऐसे व्यापारिक समझौते कर रहा है जो दोनों पक्षों के लिए हितकर हैं और जिनमें दोनों की समानता तथा वैदेशिक मुद्रा की कठिनाइयों का लिहाज रखा जाता है। जितनी तेजी से समाजवादी देशों के साथ व्यापार बढ़ेगा, उतनी ही तेजी के साथ पश्चिमी देशों से भी बढ़ेगा। इस वर्ष समाजवादी तथा पूंजीवादी, दोनों ही मण्डियों के साथ १०-१० प्रतिशत व्यापार बढ़ाने की आशा है। साथ ही, ज. ज. ग. अपना घरेलू व्यापार बढ़ाने के लिए भी कोई कसर उठा नहीं रखना चाहता।

इन सभीब ातों से मालूम होता है कि व्यापारिक साझेदारी के मामले में ज. ज. ग. पर भरोसा किया जा सकता है। हमारी आर्थिक व्यवस्था व व्यापार बराबर तरक्की कर रहे हैं और उनमें कोई संकट आने का खतरा नहीं है। इसलिए सभी देशों को हमारे साथ व्यापार करने का मौका है। यह बात लिपजिग के मेलों से भी जाहिर होती है, जहां हर वर्ष वैदेशिक लेन-देन बढ़ता ही जाता है। इसलिए ज. ज. ग. के व्यापारी अपने व्यवसायिक मित्रों और समाजवादी तथा गैर-समाजवादी देशों के व्यापारी संस्थानों के प्रतिनिधियों को निमन्त्रण देते हैं कि वे लिपजिग के मेले में आकर स्वयं हमारी आर्थिक व व्यवसायिक प्रगति को देखें। ज. ज. ग. दुनिया की जनता की खुशहाली व शांति और आर्थिक प्रगति के लिए सभी से व्यापारिक सम्बन्ध कायम करना और सभी देशों के साथ मालों का आदान-प्रदान करना चाहता है।

शांतिपूर्ण वैदेशिक नीति

शैप शुवाब
वैदेशिक मामलों के उपमंत्री

गत ७ अक्तूबर को जर्मन जनवादी गणराज्य की स्थापना को दस वर्ष पूरे हो गये। इस अवसर पर समाजवादी देशों की, जिनके साथ हमारा भाईचारे का संबन्ध है, तथा पश्चिमी जर्मनी व अन्य देशों की शांति प्रेमी जनता की जोरदार हमदर्दी ज. ज. ग. के साथ थी क्योंकि १९४९ में पहली बार जर्मनी में एक ऐसे राज्य की स्थापना हुई जिसने हमेशा के लिए विध्वंसकारी साम्राज्यवादी आक्रमणों की नीति का परित्याग कर दिया और १९४५ के पोट्सदम समझौते के अनुसार ज. ज. ग. के अन्दर समरवादियों व साम्राज्यवादियों की शक्ति खत्म हो गयी और उनके आर्थिक आधार को मिटा दिया गया। हमारे समाजवादी राज्य के आधार हैं : औद्योगिक व कृषि के नवनिर्मित समाजवादी उत्पादन संबन्ध और मजदूर वर्ग तथा मेहनतकश किसानों व अन्य मेहनतकश जनता का अटूट एवं सुदृढ़ एका।

ज. ज. ग. की वैदेशिक नीति इसी आधार के अनुसार तय होती है। ज. ज. ग. की वैदेशिक नीति का उद्देश्य न तो नये युद्ध की तैयारी करना है, न ही जाति-भेद पैदा करना, और न युद्ध का प्रचार अथवा अन्य देशों की जनता का दमन करना है। हमारे राज्य का उद्देश्य है शांति की रक्षा करना, सभी शांतिप्रिय देशों की जनता के साथ मजबूत दोस्ती के रिश्ते कायम करना और इस प्रकार समाजवाद की विजय के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करना।

ज. ज. ग. अपने उद्देश्यों और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयता के सिद्धांतों के अनुसार अपने समाजवादी कर्तव्य को समझता है। यही कारण है कि सोवियत

संघ, चीन लोक गणराज्य तथा अन्य समाजवादी देशों के साथ उसका घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध मजबूत है। हम और वे मिलकर समाजवादी समाज की रचना के लिए प्रयत्न कर रहे हैं और इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को कम करने व स्थायी विश्व शांति की स्थापना करने में लगे हैं। समाजवादी शिविर के राज्यों से हमारी घनिष्ठ मैत्री इस बात का प्रमाण है कि हम एक ऐसी नीति पर चल रहे हैं जो अन्य राष्ट्रों के प्रति विद्वेष, घृणा व जाति-भेद की साम्राज्य-वादी विध्वंसकारी नीतियों से भिन्न है।

ज. ज. ग. खुले शब्दों में उन देशों की जनता का पक्ष लेता है जो अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता को प्राप्त करने अथवा मजबूत बनाने और साम्राज्य-वादी दमन का मुकाबला करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। कई बार ज. ज. ग. एशियाई व अफ्रीकी देशों की जनता की आजादी के संघर्ष के प्रति अपने समर्थन की आवाज उठा चुका है। जब स्वेज नहर पर और लेबनान व जार्डन में साम्राज्यवादी हमले हुए, तो हमारे देश ने उनका विरोध किया।

पश्चिमी जर्मनी की नीति के विपरीत ज. ज. ग. एशिया व अफ्रीका के स्वतन्त्र राज्यों के साथ पूर्ण समानता के आधार पर अपने संबन्ध कायम किये हुए है। हम भी उन देशों के साथ आर्थिक व्यापारिक और सांस्कृतिक सम-झौते करते हैं, लेकिन इस तरह से कि लाभ दोनों पक्षों को हो और किसी को कोई हानि न हो।

ज. ज. ग. उन सभी राज्यों के साथ जो हमसे दोस्ती करने के लिए तैयार हैं, मित्रता के संबन्ध कायम करने की कोशिश करता है, क्योंकि हमारा मत है कि घरेलू सामाजिक व्यवस्था के किसी भेद-भाव के बिना विभिन्न देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबन्ध स्थापित हो जाने से विश्व शांति मजबूत होगी। इस तरह ज. ज. ग. साम्राज्यवादी शिविर के राज्यों के साथ भी आर्थिक तथा अन्य प्रकार के संबन्ध स्थापित करने के प्रयत्न करता है।

सारे संसार में शांति के लिए जो संघर्ष हो रहा है, उसमें ज. ज. ग. आगे-आगे है। वह उन सभी कार्यों का समर्थन करता है जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम हो और युद्ध का खतरा कम हो। इस प्रकार वह चाहता है कि सभी विध्वंसकारी अस्त्रों पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगा दिया जाय और परमाण्विक अस्त्रों के प्रयोग को तत्काल ही बन्द कर दिया जाय। ज. ज. ग. ने इस सुझाव का स्वागत किया है कि मध्य योरप, बालटिक क्षेत्र व बालकन देशों में परमाण्विक अस्त्र एकदम न रहें और हम परमाण्विक अस्त्रों से मुक्त ऐसे मध्य योरोपीय क्षेत्र में सम्मिलित होने के लिए तैयार हैं। ज. ज. ग. इस

लिपजिग मेले में दूसरे देशों के साथ व्यापार की बातचीत चल रही है। चित्र में बायें से दायें बैठे हुए : चेकोस्लोवाकिया के प्रतिनिधि डा. प्रसा और ज. ज. ग. के प्रतिनिधि कुपफेर दिखाई दे रहे हैं।

सुझाव का भी स्वागत करता है कि नाटो व वारसा संधियों से बंधे हुए राज्यों के बीच कोई ऐसा समझौता हो जाय कि वे एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करेंगे। हम मांग करते हैं कि जर्मनी से सभी विदेशी सेनाओं को हटा लिया जाय।

जर्मनी के अन्दर जो हालत है, उसकी वजह से ज. ज. ग. के ऊपर विशेष जिम्मेदारी आ गयी है। पश्चिमी जर्मनी में जर्मन साम्राज्यवाद व सैनिकवाद की पुरानी शक्तियों ने फिर से ताकत हासिल कर ली है और जर्मन साम्राज्यवाद के चिन्हों पर चल कर वे द्वितीय महायुद्ध में जर्मनी की हार का बदला लेने की तैयारी कर रही हैं। उनकी इस नीति का नतीजा यह है कि पश्चिमी जर्मनी एक ऐसा केन्द्र बन गया जिसमें कभी भी आग भड़क सकती है—ऐसी आग जो योरप की शांति भंग कर देगी। पश्चिमी जर्मनी के इस रवैये के विरोध में शांति के लिए संघर्ष करके ही जर्मन समस्या को

हल किया जा सकता है। इसलिए ज. ज. ग. बराबर यह कोशिश करता है कि पश्चिमी जर्मनी की तरफ से जो युद्ध का खतरा पैदा हो गया है, उसे खत्म किया जाय। हमारा मत है कि योरप की सुरक्षा के लिए, विश्व शांति की स्थापना के लिए ज. ज. ग. की यह कोशिशें बहुत महत्वपूर्ण हैं और क्योंकि जर्मन साम्राज्यवाद ने ही दोनों विश्व युद्ध शुरू किये, इसलिए यह हमारी प्रमुख जिम्मेदारी है कि हम शांति की कोशिश में लगे रहें।

इन कोशिशों के सिलसिले में हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य यह है कि जर्मनी के दोनों भागों से शांति-सन्धि हो जाय और पश्चिमी जर्मनी में स्थित तनाव केन्द्र खत्म हो जाय। शांति-सन्धि और पश्चिमी जर्मनी की समस्या हल हो जाने से सारे जर्मनी में शांतिपूर्ण वातावरण पैदा करने की दिशा में निर्णय-कारी काम हो जायगा और जर्मनी की भूमि पर शांति को भंग कर सकना मुश्किल बन जायगा।

ज. ज. ग. के प्रतिनिधि-मण्डल ने हाल में जिनेवा में विदेशी मन्त्रियों के सम्मेलन में जो रुख लिया था, वह हमारी शांति-प्रिय वैदेशिक नीति को व्यक्त करता है और यह जाहिर करता है कि हम जर्मनी से संबन्धित सवालों को समझौते की बातचीत के जरिए और शांति-सन्धि के जरिए हल करना चाहते हैं। जिनेवा के वैदेशिक मन्त्रियों के सम्मेलन में जर्मनी के दोनों भागों के प्रतिनिधि बराबरी के आधार पर सम्मिलित हुए थे। इसी से जाहिर होता है कि ज. ज. ग. के अन्तर्राष्ट्रीय अधिकार को तथा जर्मनी व योरप में शांति की स्थापना के लिए ज. ज. ग. द्वारा किये गये प्रयत्नों को भी सभी स्वीकार करते हैं। जिनेवा सम्मेलन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जर्मन जनता से सम्बन्धित कोई भी सवाल ज. ज. ग. के सहयोग के बिना हल नहीं किया जा सकता है।

अपनी दसवीं वर्षगांठ मनाते समय ज. ज. ग. सन्तोष के साथ अपनी शांति-पूर्ण व जनवादी वैदेशिक नीति की सफलता का मूल्यांकन गर्व के साथ कर सकता है। इस वैदेशिक नीति को उन सभी का समर्थन प्राप्त है जो जर्मनी व अन्य देशों की जनता के लिए शान्ति की रक्षा करना चाहते हैं। ज. ज. ग. आगे भी इसी नीति के अनुसार काम करता रहेगा और मानव जाति की खातिर शांति पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए वातावरण तैयार करता रहेगा।

●

सफल आर्थिक विकास

फ्रेडरिक माशेर
राज्य योजना आयोग सचिव

सन् १९४९ ई० में जर्मन जनवादी गणराज्य का प्रारम्भ कठिनाइयों से परिपूर्ण था। १९४५ में जर्मन-फासिज्म अपने पीछे जर्मन श्रमजीवी वर्ग के लिए अराजकता और दयनीयता की स्थिति छोड़ गया था। अधिकांश उद्योग-धन्धे नष्ट हो चुके थे। सभी महत्वपूर्ण कच्चे माल पश्चिमी जर्मनी में थे। १९३६ में जर्मनी के कुल उत्पादन के अनुपात में पत्थर के कोयले के भंडार का केवल २·७ प्रतिशत, कच्चे लोहे का १·७ प्रतिशत और इस्पात की उत्पादन-क्षमता का ६·६ प्रतिशत ही ज. ज. ग. में उपलब्ध था। दूसरी ओर देश की शक्ति का ६१ प्रतिशत, टैक्सटाइल का ५५·५ प्रतिशत और मशीनी उपकरणों के उत्पादन का ४९·७ प्रतिशत ज. ज. ग. में था। इस प्रकार पश्चिमी राष्ट्रों की साजिश के कारण जर्मनी के विभाजन ने ज. ज. ग. को उसके कच्चे मालों के स्रोतों से और भारी उद्योगों से अलग कर दिया। अतएव ज. ज. ग. के आर्थिक निर्माण की भौतिक पूर्वस्थिति पश्चिमी जर्मनी से निम्नस्तर की थी। अतः आधारभूत पदार्थों और निर्माण उद्योगों की असमानता को घटाने के लिए १९५०–५५ की प्रथम पंचवर्षीय योजना में सबसे अधिक जोर भारी उद्योगों की आधारशिला के निर्माण पर दिया गया।

इस बीच आन्टरबेलेनबौर्न में मैक्स फाउंड्री, ब्रैंडेनबर्ग, हेग्निग्स डॉर्फ, रीसा और ग्रोयेदिज के इस्पात कारखाने और रौलिंग मिल फिर से बनाये गये, या उनका विस्तार किया गया। इसी बीच स्टालिनस्ट्राट में आयरन फाउन्ड्री कम्बाइन का निर्माण हुआ जहां सोवियत संघ से प्राप्त कच्चा लोहा और पोलैंड

से प्राप्त कोक से धमन लौह तैयार किया जाता है। लौछामेर में एक वृहत कोकिंग प्लॉट का निर्माण हुआ जो लिगनाइट ब्रिकेट्स से मेटालर्जिकल कोक तैयार करने वाला दुनिया में पहला कारखाना था। इस उच्च तापमान वाले लिगनाइट कोक का इस्तेमाल दूसरे नवनिर्मित काल्ब के मेटालेर्जिकल वर्क्स की लो सैफ्ट भट्ठियों में होता है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कोयला और शक्ति की लगातार बढ़ती हुई मांगों को पूरा करने की दृष्टि से ज. ज. ग. की सरकार ने कोयला और विद्युत सम्बन्धी एक विशेष कार्यक्रम अपनाया। अत: १९५० से १९५९ तक १५ नये खुले लिगनाइट खानें चालू हो गयीं।

इस क्षेत्र की सबसे बड़ी योजना लिगनाइट कम्बाइन "श्वार्ज पम्प" (ब्लैक पम्प) ने, जिसका पहला भाग निश्चित समय से पहले ही तैयार हो गया था, पहली मई १९५९ को अपने प्रथम ब्रिकेट्स तैयार किये। १९५८ में २१करोड़ ५० लाख टन लिगनाइट पैदा करने वाला ज. ज. ग. विश्व का सबसे अधिक लिगनाइट उत्पादक देश है।

बढ़ती हुई औद्योगिक क्षमताओं की मांग पूरी करने के लिए २७–५० एम. डब्ल्यू. क्षमता के नये विद्युत केन्द्रों ने १९५०-५८ के बीच काम शुरू किया। पहले से मौजूद विद्युत केन्द्रों का विस्तार किया गया और नये बनाये गये, जैसे एल्ब, ट्रैटेनडार्फ, बर्जडार्फ, शोर्नविज, हिर्श्चफेल्ड और लौटा के विद्युत केन्द्र। प्रति व्यक्ति औसत विद्युत उत्पादन में योरोप में नार्वे और स्वीडन के बाद ज. ज. ग. का तीसरा नम्बर आता है और विश्व के विद्युत उत्पादन में इसका स्थान पांचवां है।

गत दस वर्षों में आर्थिक निर्माण में तेज गति प्राप्त करने का अधिकांश श्रेय मशीन निर्माण उद्योग को दिया जाना चाहिए। ज. ज. ग. का यह सबसे विकसित उद्योग है और देश के कुल औद्योगिक उत्पादन का ३० प्रतिशत यह पूरा करता है। भारी इंजीनियरिंग उद्योग जो जर्मनी के इस क्षेत्र में नहीं के बराबर था, आज रौलिंग मिलों, बड़े विद्युत केन्द्रों और मशीनी उपकरणों के लिए स्वचालित औजारों का निर्माण करता है।

ज. ज. ग. समाजवादी देशों में सोवियत संघ के बाद मशीनों के उत्पादन और मशीनरी एवं औद्योगिक औजारों के निर्यात में दूसरा स्थान रखता है। ज. ज. ग. के कुल निर्यात का करीब ५७ प्रतिशत इंजीनियरिंग का सामान होता है। औद्योगिक प्लांटों के पूरे सेटों का बहुत अधिक हिस्सा समाजवादी देशों को निर्यात किया जाता है।

इससे भी अधिक गत दस वर्षों में यहां बहुत ही कुशल जहाज निर्माण उद्योग का निर्माण हुआ है जिसके उत्पादन में १० हजार टन के भारवाही शामिल हैं। प्रसन्नता की बात है कि सोवियत विशेषज्ञों की सहायता से ज. ज. ग. बहुत ही कम समय के अन्दर अपने यहां हवाई जहाज निर्माण उद्योग कायम कर सकने में सफल हुआ है। इस उद्योग ने न केवल आधुनिक हवाई यातायात के लिए आधार तैयार किया है, बल्कि निर्यात के लिए भी हवाई जहाज तैयार होने लगा है।

विमानों का निर्यात होगा

सोवियत संघ के साथ प्राविधिक और वैज्ञानिक सहयोग की बदौलत ज. ज. ग. की भूमि पर प्रथम ऐटमिक रिएक्टर अपना काम करने लगा है।

गत दस वर्षों का लेखा-जोखा बताता है कि १९४९ के मुकाबले में १९५८ का औद्योगिक उत्पादन ३०६ प्रतिशत बढ़ गया जब कि इसी बीच श्रम की उत्पादन शक्ति में १८८ प्रतिशत की वृद्धि हुई। आज ज. ज. ग. के औद्यौगिक उत्पादन का योरोप में पांचवां और विश्व में सातवां स्थान है। समाजवादी देशों में ज. ज. ग. का स्थान सोवियत संघ के बाद दूसरा है।

ये सफलताएं जिस पर ज. ज. ग. के श्रमजीवी वर्ग को सही गौरव है, अधिकांशतः सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों के सहयोग और भ्रातृत्वपूर्ण सहायता से प्राप्त हुई हैं। उनकी निस्वार्थ सहायता ने न केवल ज. ज. ग. में आर्थिक उत्थान को आगे बढ़ाया, बल्कि उसके फलस्वरूप बहुत से देशों के विशेषज्ञों और श्रमिकों में मैत्री सम्बन्ध भी स्थापित हुए। जबसे युद्ध अपराधियों, इजारेदारों और जमींदारों को ठुकरा कर उन्हें सत्ताच्युत कर दिया गया है, तब से ज. ज. ग. के सामाजिक और आर्थिक बनावट में बुनियादी परिवर्तन हुए हैं। १८४८ में कुल आर्थिक उत्पादन में समाजवादी कारखानों का हिस्सा केवल ५८ प्रतिशत था। १९५० तक यह बढ़कर ७३ प्रतिशत और १९५८ में ८९ प्रतिशत हो गया। १९५८ में कुल उत्पादन का ७६.५ प्रतिशत समाजवादी उद्योगों द्वारा, २.६ प्रतिशत राजकीय साझेदारी में चलने वाले व्यक्तिगत फर्मों द्वारा और २०.० प्रतिशत व्यक्तिगत पूंजी द्वारा पैदा किया जाता था।

हस्तशिल्प उद्योगों में काम करने वालों का क्रमशः सहयोग समितियों में विलयन और व्यक्तिगत पूंजीपतियों का राजकीय साझेदारी में परिवर्तन उत्पादन के समाजवादी रूपान्तर को तेजी से आगे बढ़ा रहा है। जुलाई १९५९ के

प्रारम्भ तक ज.ज.ग. में व्यक्तिगत मालिकों की संख्या १२ हजार थी। उनमें से ६७६३ ने राजकीय साझेदारी के लिए आवेदन पत्र भेजा था। जून १९५९ में २९९८ हस्तशिल्प उत्पादन सहयोग समितियां कार्य कर रही थीं जिनकी पूरी सदस्य संख्या ८७,०२५ थी।

१९४९ में जब ज. ज. ग. की स्थापना हुई थी तो बहुत से नागरिकों को सन्देह था कि योजनाएं कभी पूरी होंगी और बेहतर जीवन-स्तर प्राप्त भी होगा। "हम आज जैसा काम करेंगे कल वैसा ही फल प्राप्त होगा"—यह नारा ज.ज.ग. में अधिकाधिक लोकप्रिय हो गया है और उसके काफी अच्छे परिणाम निकले हैं। १९५०-१९५८के बीच राष्ट्रीय आमदनी में २१०·७ प्रतिशत की बढ़ती हो गयी है।

श्रमिकों और कर्मचारियों की औसत मासिक तनखा १९५० में २५६ से बढ़कर १९५८ में ४०९ मार्क हो गयी है। ज. ज. ग. की स्थापना के बाद चीजों की कीमतों में २० बार कमी हो जाने के कारण खाद्य सामग्रियों और इस्तेमाल की औद्योगिक वस्तुओं की कीमतें काफी कम हो गयी हैं। खुदरा व्यापार १९४९ के मुकाबले १९५६ में २१८ प्रतिशत बढ़ गया है।

जुलाई १९५८ में जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी की ५वीं कांग्रेस ने फैसला किया कि मुख्य आर्थिक कर्तव्य राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था का इस ढंग से विकास होना चाहिए कि कुछ ही वर्षो में जर्मनी में पूंजीवाद के मुकाबले समाजवादी अर्थव्यवस्था की श्रेष्ठता निश्चय ही स्थापित हो जाय। श्रमजीवी वर्ग की पेशकदमी और ताकत तथा समाजवादी देशों की मैत्रीपूर्ण सहायता इस बात की सबसे अच्छी गारंटी है कि यह योजना १९६१ तक अवश्य सफलीभूत होगी। बड़ी तेज़ रफ्तार से इस उद्देश्य की पूर्ति इसलिए भी आवश्यक है कि बोन सरकार १९६१ तक फेडरल रिपब्लिक का परमाणुशस्त्रीकरण करना चाहती है। ज. ज. ग. मौत की इस योजना का जवाब श्रमिकों के जीवन को उन्नत बना कर देना चाहता है। इसका असर अवश्य ही पश्चिमी जर्मनी की शान्ति-शक्तियों पर पड़ेगा।

सप्तवर्षीय योजना में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के उन कर्तव्यों की परिकल्पना है जिसे पहले सोचा भी नहीं जा सकता था। ज. ज. ग. का आर्थिक उत्पादन १९५८ के मुकाबले में ९० प्रतिशत तक बढ़ जायेगा। कृषि का विकास इस ढंग से किया जाना है जिससे कि वह अपने साधनों के बल पर जनता को मांस दूध, मक्खन और अंडे आदि पर्याप्त मात्रा में दे सके। मुख्य आर्थिक कर्तव्य
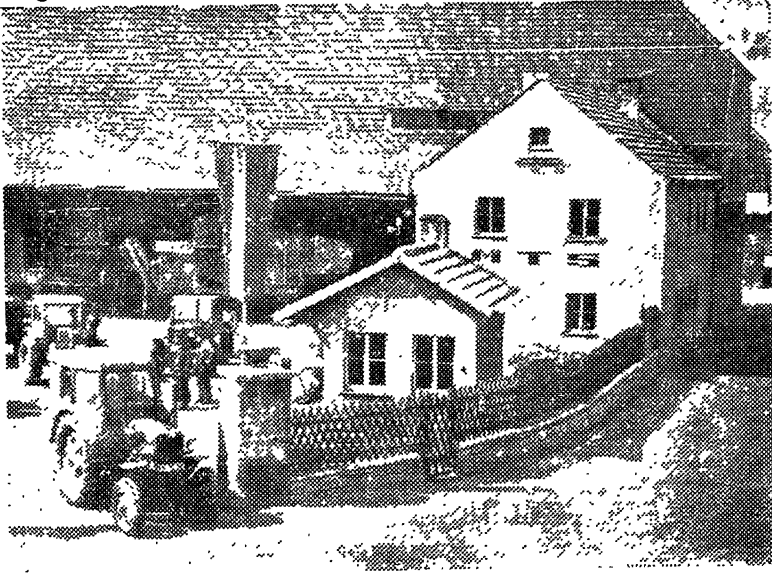
ओडेसा गांव का एक मशीन ट्रैक्टर स्टेशन

पूरा करने के लिए घरेलू बाजार को सप्लाई करने के निमित्त चीज़ों के स्टाक में १९५८ के मुकाबले ३३ प्रतिशत वृद्धि होगी। आनेवाले वर्षों में हमारे गणराज्य के लोगों के जीवन-स्तर में लगातार वृद्धि होती रहेगी।

सप्तवर्षीय योजना काल में आर्थिक विकास का मुख्य केन्द्र-बिन्दु रासायनिक उद्योग है। इस उद्योग का कुल उत्पादन १९५८ के मुकाबले १९६५ में दूना हो जायेगा। १९५८ के मुकाबले प्लास्टिक का उत्पादन २.८ गुना और संक्षिप्त रेशों का उत्पादन ५.८ गुना हो जायेगा। इस तरह इन चीजों का फी व्यक्ति उत्पादन पश्चिमी जर्मनी और अमरीका से बढ़ जायेगा।

लिगनाइट की खानों और विद्युत उत्पादन के अधिक विकास को अधिक महत्व दिया जायेगा। १९६५ में २९ करोड़ टन लिगनाइट के उत्पादन की योजना रखी गयी है। इस लिगनाइट के अधिकांश भाग को विद्युत शक्ति में परिवर्तित किया जायगा। ल्यूबेनाउ और वेत्सचाउ नामक नये बनने वाले दो विद्युत केन्द्र लगभग प्रति वर्ष १५०० करोड़ किलोवाट घंटा बिजली तैयार

करेंगे। १९३६ में ज. ज. ग. के क्षेत्र में स्थित कुल विद्युत केन्द्रों के सम्मिलित उत्पादन से यह अधिक होगा।

इंजीनियरिंग उद्योग १९५८ के मुकाबले १९६५ में अपना उत्पादन दूना से भी अधिक कर लेगा। अत्यधिक ऊंची प्राविधिक स्तर की मशीनों और साजो-सामान की सप्लाई की वजह से न सिर्फ ज.ज.ग. में यंत्रीकरण और स्वचालन की प्रक्रिया आगे बढ़ेगी, बल्कि समाजवादी देशों में इंजीनियरिंग उत्पादनों का हमारा निर्यात भी बढ़ जायगा। सप्तवर्षीय योजना के लक्ष्यों की पूर्ति के पहले बहुत सी कठिनाइयों को दूर करना होगा। अतिरिक्त श्रमिकों का मिलना दूभर है। फिर भी उत्पादकता का विकास उसी गति या उससे भी तेज गति से करना है जितनी कुल औद्योगिक उत्पादन के विकास की गति है। बहुत से कारखानों के सामने यह समस्या है कि उन्हें उतने हो या उससे भी कम श्रमिकों के द्वारा उत्पादन दूना करना है। ज. ज. ग. में सभी औद्योगिक शाखाओं और कारखानों का समाजवादी पुनर्निर्माण जिस व्यवस्थित ढंग से चल रहा है और उत्पादन का आधुनिकतम प्राविधिक स्तर जिस ढंग से पुनर्गठित हो रहा है, वह निश्चित रूप से श्रम की उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक होगा।

विगत कुछ वर्षों की आर्थिक सफलताएं और समाजवादी निर्माण की अगली सम्भावनाएं श्रमिकों की सृजनात्मक शक्ति के सबूत हैं। वे मजदूर और किसान राज्य के वातावरण में अपनी योग्यताओं को अबाध गति से विकसित कर सकते हैं। अन्य समाजवादी देशों के भ्रातृत्वपूर्ण सहयोग से ज. ज. ग. का मजदूर वर्ग समाजवाद और पूंजीवाद की आर्थिक होड़ में पूरी तरह हिस्सा लेगा जिससे कि युद्ध और शान्ति के बीच इस रस्साकशी में शांति का पक्ष शक्तिशाली और विजयी हो सके।

●

समाजवादी खेती

पाल स्कोल्ज
मन्त्रि-परिषद के उपाध्यक्ष

राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के अन्य अंगों की तरह जर्मन जनवादी गणराज्य में कृषि के क्षेत्र में भी विगत दस वर्षों में ऐतिहासिक परिवर्तन हुए हैं। ज. ज. ग. की कृषि के नये रूप में बड़े पैमाने पर समाजवादी कृषि व्यवस्था की स्थापना व विकास तथा सहकारी कृषि उत्पादन करना है।

ज. ज. ग. की कुल कृषि योग्य भूमि में से इस समय ४०.५ प्रतिशत भूमि पर सहकारी उत्पादक समितियां काश्त करती हैं।

ज. ज. ग. में सन १९४५ में जनवादी भूमि सुधार कर लिये गये थे जिनसे कृषि के समाजवादी विकास की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति हो गयी थी। एक सौ हेक्टेयर (१ हेक्टेयर करीब २।। एकड़) से अधिक जमीन वाले जमींदारों की जमींदारी बिना मुआवजा दिये खत्म कर दी गयी। इस तरह ३,००,००० खेत मजदूरों, गरीब किसानों और फिर से बसाये जाने वाले लोगों को करीब २२ लाख हेक्टेयर जमीन (ज. ज. ग. में कृषि योग्य भूमि का एक तिहाई भाग) तथा अपने मवेशी और जमीन के अलग-अलग चक दे दिये गये। इसके अलावा बहुत आला किस्म के बीज तथा मवेशियों की अच्छी नस्लें पैदा करने के लिए ५०० से अधिक राष्ट्रीय-स्वामित्व के फार्मों की स्थापना की गयी।

भूमि सुधारों के फलस्वरूप मजदूर-किसानों में एकता तथा तमाम मेहनतकश लोगों में सहयोग की भावना उत्पन्न हुई, जिससे मजदूर-किसानों की शक्ति का अभ्युदय हुआ।

सन १९५८ से ज. ज. ग. में समाजवाद का निर्माण मुख्य कार्य बन गया। सरकार तथा समस्त राजकीय विभागों द्वारा पूरा समर्थन मिलने पर किसान

और उनकी स्त्रियां द्रुत गति से समाजवाद की राह पर अग्रसर हुए और कृषि उत्पादन सहकारी समितियों का निर्माण करने लगे।

इस विकास को निम्नलिखित आंकड़ों से समझा जा सकता है :[1]

वर्ष	कृ. उ. स. स. की संख्या	कुल कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत	सदस्य संख्या
दिसम्बर १९५२	१.९०६	३.३	३७,०००
दिसम्बर १९५४	५.१२०	१४.३	१५८,३५६
जुलाई १९५९	९.५७७	४०.५	३९८,८२६

सहकारिता विकास के इस दौरान में बहुत सी सहकारी समितियां बहुत बड़े पैमाने पर उत्पादन करने लगी हैं। उन्नत कृषि स. समितियां गांव के सभी फार्मों या उनमें से अधिकांश को एकता के सूत्र में बांध लेती हैं। १००० से अधिक गांव ऐसे हैं जहां कृ. स. स. कुल कृषि योग्य भूमि के ८० प्रतिशत पर काश्त करती हैं (ज. ज. ग. में कुल ९,५०२ गांव हैं)।

ज. ज. ग. की कृषि सहकारी समितियां व्यक्तिगत कृषि के मुकाबले अपने को श्रेष्ठ सिद्ध कर चुकी हैं। कृषि योग्य भूमि के प्रति हेक्टेयर का उच्च उत्पादन स्तर तथा बाजार के लिए पैदा किये जाने वाले माल का अपेक्षाकृत द्रुत विकास सहकारी समितियों की अर्थ-व्यवस्था की श्रेष्ठता सिद्ध करता है।

हमारे आवश्यक कार्यों में एक यह है कि कम विकसित समितियों की सहायता करने के लिए ऐसे साधनों का प्रयोग करें जिनसे उत्पादन में विकास हो सके। हमें अनुभवी कार्यकर्त्ताओं को भी नियुक्त करना पड़ेगा ताकि इसी वर्ष से लाभ प्राप्त किया जा सके। सहकारी कृषि के विकास में प्राप्त सर्वोत्तम अनुभवों तथा सहकारी समितियों को मजबूत तथा एकताबद्ध करने के प्रश्न पर विचार करने के लिए हर साल या हर तीसरे साल सहकारी कृषि समितियों के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं तथा अध्यक्षों के सम्मेलन हुआ करते हैं, जिनमें जिला परिषदों की स. कृ. स. सलाहकार समितियां तथा ज. ज. ग. का मंत्रि-परिषद् भी सहायता प्रदान करते हैं।

कृषि-उत्पादन के कार्य का विकास करने में, विशेषतः कृषि के समाजवादी कायाकल्प में १९४९ में निर्मित मशीन तथा ट्रैक्टर स्टेशनों (म. ट्रै. स्टे.) का विशेष हाथ है। हमारी सरकार म. ट्रै. स्टे. को अच्छे से अच्छे सामान देती रहती है ताकि वे अपना कार्य पूरा कर सकें। १९४९ में म. ट्रै. स्टे. के पास करीब ७,००० ट्रैक्टर थे। आज इनकी संख्या ४०,००० के पास पहुँच गयी है।
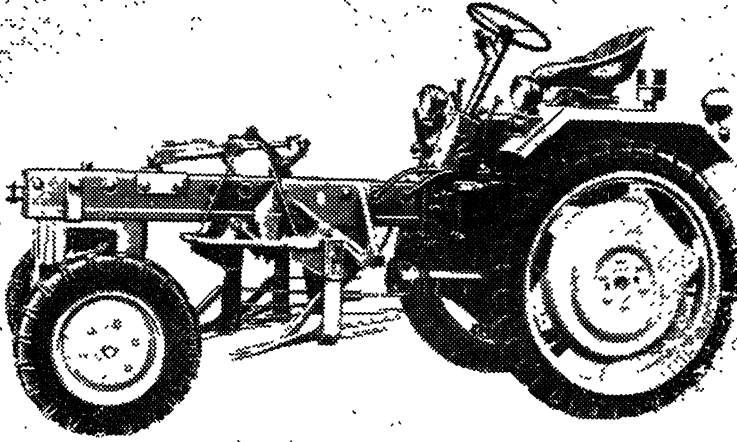
ऊपर : इस मशीन के ३५ उपकरण ३५ भिन्न-भिन्न कार्य करते हैं ।

नीचे : किसानों की सहायता के लिए एक मशीनगृह ।
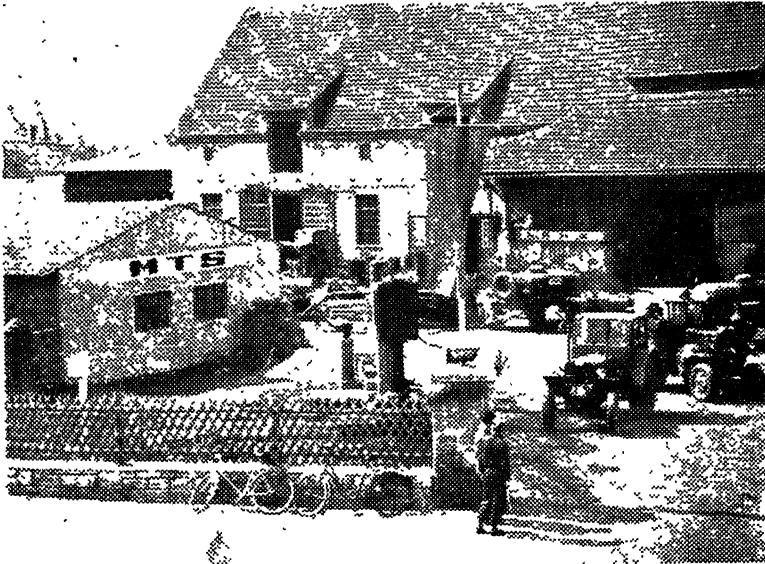
इसके अलावा म. ट्रै. स्टे. के पास ४,००० से अधिक हार्वेस्टिंग कंबाइन मशीनें, २८०० बीट हार्वेस्टर और करीब ५,००० आलू के हार्वेस्टर भी हैं जब कि १९४९ में इनमें से कुछ भी नहीं था। १९४९ से १९५९ तक म. ट्रै. स्टे. द्वारा किये जाने वाले कार्य में कुल मिला कर दस गुना वृद्धि हुई है। स. कृ. स. तथा व्यक्तिगत रूप से कार्य करने वाले किसानों को आर्थिक, माली तथा प्राविधिक सहायता देने के अलावा म. ट्रै. स्टे. एक और कार्य भी करते हैं—छोटी आय वालों के सोचने के तरीके में सुधार करना। स.कृ.स. में इस वक्त सहकारिता के विकास की विभिन्न स्थितियों के अनुसार आधुनिक कृषि इंजीनियरी का प्रयोग, अर्थात मशीन तथा ट्रैक्टर स्टेशनों का सहयोग प्राप्त किया जाता है। १९५९ तक म. ट्रै. स्टे. तथा स. कृ. स. का पारस्परिक सहयोग वार्षिक समझौतों पर आधारित था।

पिछले दो वर्षों में बड़े पैमाने पर बहुत-सी सहकारी समितियों के विकास के फलस्वरूप और समाजवादी कृषि की वृद्धि के कारण सहकारी समितियों के अध्यक्ष के नियंत्रण में वार्षिक कार्यभार के आधार पर अधिक से अधिक म. ट्रै. स्टेशन कर दिये गये।

इस वर्ष फरवरी में हुए स. कृ. स. के अधिवेशन की रिपोर्ट तथा सिफारिशों के अनुसार ज. ज. ग. की सरकार ने निश्चय किया है कि म. ट्रै. स्टेशन अस्थायी तौर पर ऐसी स. कृ. स. को हस्तांरित कर दिये जायं जिनमें गांव के समस्त किसान शामिल हो चुके हों या जो गांव के कृषि योग्य भूमि के ८० प्रतिशत भाग पर काश्त कर रही हो। अब तक के अनुभवों से पता चलता है कि ये सहकारी समितियां मशीनों के समुचित प्रयोग द्वारा उत्पादन गति में वृद्धि करती हैं।

म. ट्रै. स्टे. की लाभकारी सहायता के अलावा स. कृ. स. को पूरे सौ करोड़ जर्मन मार्क का अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन ऋण भी दिया जाता है। इसका इस्तेमाल मवेशी खरीदने, मशीनें तथा औजारों को मंगवाने तथा व्यक्तिगत निवास के लिए मकान बनाने के लिए किया जा सकता है।

टैक्सों में कटौती, किसान पर से अनिवार्य लगान का भार कम करने तथा अन्य नियमों में सुधार के कारण किसानों के लिए व्यक्तिगत खेती को छोड़ कर सहकारी खेती में शामिल होने का आकर्षण बढ़ गया है।

सहकारी आन्दोलन के प्रभाव की वृद्धि का एक और कारण यह भी है कि सहकारी कृषि या सहकारी बागवानी के सदस्यों के बीच की व्यवस्था भी कानून के द्वारा कर दी गयी है। दसवें दर्जे तक के आधुनिक स्कूलों, सांस्कृतिक गृहों,

जर्मन जनवादी गणराज्य की
एक स्वस्थ, सुन्दर और
कुशल युवती ।

फसल की कटाई के लिए ६ हार्वेस्टिंग कम्बाइनें
साथ-साथ काम कर रही हैं ।

अस्पतालों, शिशुशालाओं, दूकानों तथा धोबीखानों के निर्माण से गांवों का पिछड़ापन दूर होता जा रहा है तथा गांवों के सांस्कृतिक जीवन का स्तर दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है ।

जर्मन जनवादी गणराज्य की फैक्टरियों तथा गांवों में सप्तवर्षीय योजना के उद्देश्य तथा कार्यों पर आजकल खूब बहसें होती हैं, जहां लोग सहकारी कृषि समिति, देहातों तथा जिलों की संभावित रूपरेखायें बनाया करते हैं ।

सप्तवर्षीय योजना के प्रारूप में, जो जनमत संग्रह के लिए पेश किया गया है, १६६५ तक निम्नलिखित उत्पादन पूरा करने के सुझाव हैं :

अनाज	३०.५	क्विंटल	प्रति	हेक्टेयर
आलू	२४५	,,	,,	,,
शकरकंद	३८५	,,	,,	,,

पशु उत्पादनों की वृद्धि इस प्रकार की जायेगी :

पशु (मुर्गी आदि समेत)	७२.७	किलोग्राम	प्रति हे.
सुअर	१३५.५	,,	,,
दूध	१.७८७	,,	,,

[प्रति गाय ३.५ प्रतिशत वसा सहित ३.५०० किलोग्राम दूध के हिसाब से] ।

अंडे	४५७ अंडे प्रति हे.

अनेक सहकारी समितियों ने उपरोक्त उत्पादनों के बराबर और कहीं-कहीं उससे भी अधिक पैदावार अभी से प्राप्त कर ली है । यह तथ्य साबित करता है कि सप्तवर्षीय योजना में कृषि उत्पादन के लक्ष्य निश्चय ही पूर्ण होंगे ।

रासायनिक कार्यक्रम

डॉ. वेर्नेर विंकलर

आर्थिक योजना आयोग के सदस्य

जर्मनी में रासायनिक विज्ञान और उत्पादन की युगों पुरानी परम्पराओं और उसके भारी मात्रा में उत्पादन के कारण ज. ज. ग. के रासायनिक उद्योग का जबर्दस्त महत्व है। उत्पादन की मात्रा के अनुसार सोवियत संघ के बाद योरप में उसका दूसरा स्थान है और समूचे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सातवां स्थान है।

महत्वपूर्ण रासायनिक उत्पादों के प्रति-इकाई उत्पादन में ज. ज. ग. के रासायनिक उद्योग को निश्चय ही ऊंचा स्थान प्राप्त है। ज. ज. ग. की स्थापना के बाद पिछले दस वर्षों में रासायनिक उद्योग के सामने युद्ध के नुकसानों को खत्म करने, जर्मनी के बंटवारे से उत्पन्न असंतुलन को पाटने और बुनियादी रासायनों के उत्पादन का आवश्यक विकास करने का काम रहा है। अगले सात सालों का काम उत्पादन का जबर्दस्त विकास, खास कर उच्च कोटि के पोलीमरों यथा प्लास्टिकों, संश्लेषित रेशों के क्षेत्र में जबर्दस्त विकास की स्थिति हासिल करना है।

यह शानदार भविष्य योजना एस. ई. डी. की पांचवीं पार्टी कांफ्रेंस और ज. ज. ग. की मंत्रि परिषद ने निश्चित की थी। यह योजना एस. ई. डी. की केन्द्रीय समिति और आर्थिक आयोजन व नियंत्रण के लिए राज्य आयोग के पथ प्रदर्शन में नवम्बर १९५८ में प्रथम जर्मन रासायनिक सम्मेलन में विज्ञान के प्रतिनिधियों, आर्थिक कार्यकर्ताओं और उत्पादन श्रमिकों के सामने रखी गयी थी। ज. ज. ग. के रसायन उद्योग के पास इन विशाल कार्यों के लिए आगामी ७ वर्षों में ११० अरब जर्मन मार्क पूंजी लगाने के साधन
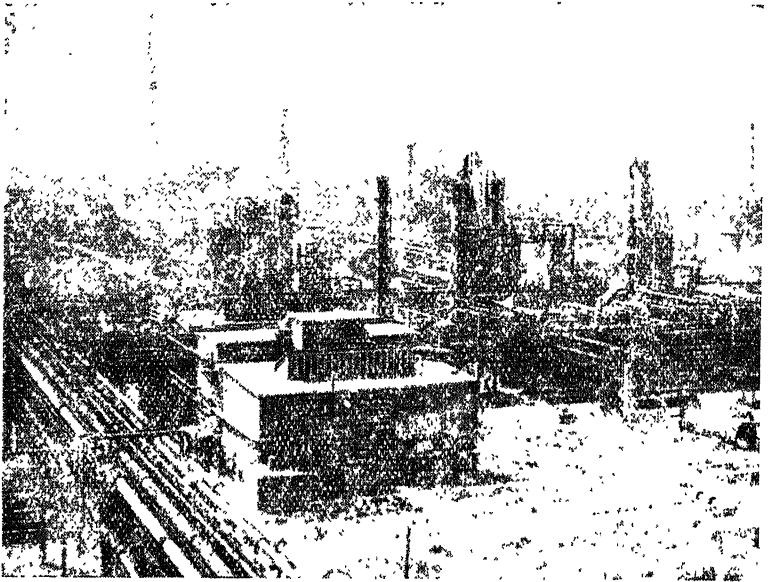
ल्यूना रासायनिक कारखाने की एक झांकी

मौजूद हैं। इसका अर्थ है कि पिछले ७ वर्षों में जो पूंजी लगायी गयी उससे ४·२ गुना अधिक पूंजी लगायी जायेगी।

उत्पादन की मात्रा १९५८ के मुकाबले में २०६ प्रतिशत अधिक बढ़ायी जायेगी और ज. ज. ग. की स्थापना के वक्त से ५·१ गुना अधिक। सप्त-वर्षीय योजना द्वारा ज. ज. ग. की समूची राजनीतिक अर्थ व्यवस्था के विकास के अन्तर्गत रसायन उद्योग का विकास, आखिर प्रमुख रूप से हो जाता है। रसायन उद्योग के उत्पादन का पूर्ण विकास सप्तवर्षीय योजना काल में वर्तमान कारखानों में ७० प्रतिशत बढ़ती से प्राप्त किया जायेगा।

वर्तमान विधियों और संस्थानों के सुधार और आधुनिकीकरण के लिए, वर्तमान उत्पादन क्षमताओं से अधिकतम कार्य लेने के लिए, अधिकतम उत्पादन की विशेषता प्राप्त करने और उस पर जोर देने के लिए इन कारखानों में विस्तृत पुनर्निर्माण का कार्य पूरा किया जायेगा। इसके अलावा वर्तमान उत्पादन संस्थानों की क्षमता निरन्तर बढ़ायी गयी है और फैक्टरी के समूचे भाग नये बने हैं। इनके साथ बिलकुल नये कारखाने भी खड़े किये गये हैं। उदाहरण

के लिए, एक नया कारखाना पेट्रोलियम प्रोसेस का और एक रासायनिक रेशा कम्बाइन कारखाना खोला गया है।

हमारी अर्थ व्यवस्था में रसायन उद्योग, उपभोग की वस्तुओं का **विशाल** उत्पादन होने के कारण और दूसरे औद्योगिक शाखाओं में उत्पादों के उपभोग वस्तुओं में निर्मित किये जाने के कारण, जरूरी भूमिका अदा करता है। फोटोग्राफी और सिनेमा की फिल्में, लाख और चित्रकारी के सामान, धुलाई की चीजें, शृंगार की वस्तुएं, मोटरों के टायर और ट्यूबें, तरह-तरह की चीजों के रूप में ईंधन और ल्यूबरीकेंट लोगों को मुहैया किये जाते हैं। आर्थिक कार्यों के संभरण में प्लास्टिकों और रासायनिक रेशों का बहुत महत्व है। कुछ थोड़ों के नाम गिनाये जा सकते हैं। जैसे मिकैनिकल इंजीनियरिंग और घरेलू जरूरत के औजार व साजसमान बनाने वाले हल्के उद्योग, जिनमें रेफ्रीजिरेटर, इलेक्ट्रीकल चीजें, निजी मोटरकारें, नौकाएं, टेक्सटाइल आदि शामिल हैं। इसके अलावा इनसे खादें, पौदों की रक्षा के लिए दवाएं, कीटाणुनाशक कृषि में प्रति एकड़ पैदावार की वृद्धि, और जानवरों में मांस की पैदावर बढ़ाने के लिए बायोकैटेलिस्ट भी प्राप्त होते हैं।

१९५८ के उत्पादन के मुकाबले में १९६१ में दूसरी चीजों के साथ-साथ इन पैदावारों को नीचे लिखे मुताबिक बढ़ाया जायेगा।

वस्तु	प्रतिशत तक
पी. वी. सी. पाउडर	१५०
पी. सी. पाउडर	५००
पोलीवीनाइल एसीटेट	२९०
पोलीस्टीरोल	३००
पी-सी-फाइब्र (रेशे)	३०८
पी. ए. एन.—रेशे	३९०

रसायन उद्योग का तीव्र विकास १९६१ के बाद भी जारी रहेगा। १९६५ में प्लास्टिक का उत्पादन १९६० के मुकाबले में २.५ गुना बढ़ जायेगा। सुप्रसिद्ध प्लास्टिकों, यानी पी. वी. सी. व पोलीस्टीरोल के उत्पादन में विकास के अलावा विस्तृत प्राविधिक ढंग पर नये किस्म के प्लास्टिक पैदा किये जायेंगे। इस प्रकार पोलीएथीलीन का उत्पादन १९६३ में ५० ये टीटी तक बढ़ा दिया जायेगा। इसी के साथ १९६५ तक पोलीईस्टर का उत्पादन भी ५ टीटी तक बढ़ा दिये जाने की योजना है।

रासायनिक रेशों के क्षेत्र में पूर्णतया संश्लेषित रेशों का उत्पादन १९६५ में १९६० की अपेक्षा ४·६ गुना बढ़ जायेगा। रेशों की नयी किस्म में पोलीईस्टर रेशों और पोलीईस्टर रेशम का उत्पादन बड़ी मात्रा में शुरू होगा और दोनों में ८ गुना वृद्धि होगी। १९६५ तक यह वृद्धि १० गुना हो जायेगी। इसमें गुबेन में स्थापित हो रहे रासायनिक रेशा कम्बाइन कारखाने का निर्माण किये जाने की आवश्यकता है। यह कारखाना ऊपर बतायी गयी दो किस्मों के अतिरिक्त उत्तम डेडीरोन रेशम भी पैदा करेगा।

परंपरागत पूर्णरूपेण संश्लेषित रेशों का उत्पादन १९५८ के अनुपात में १९६५ में निम्नानुसार बढ़ा दिया जायेगा :

नाम	वृद्धि
डेडीरोन	१.८ गुना
डेडीरोन उत्तम रेशम	३.९ ,,
डेडीरोन कोर्ड रेशम	३.८ ,,
पी-सी-रेशा	५.४ ,,
पोलीएक्राइल नाइट्राइट रेशा	१३·१ ,,

उच्च पोलीमरों के उत्पादन के इस द्रुत विकास की पहली शर्त कार्बाइड रसायन की लगातार पूर्णता के साथ-साथ विस्तृत पेट्रोल रसायन का प्रबंध है। इस प्रकार बूना का रसायन कारखाना विश्व का सबसे बड़ा कार्बाइड उत्पादन प्रतिष्ठान बन जायेगा।

"वाल्टर उल्ब्रिख्त" ल्यूना कारखाने में एक पायरोलिसिस संस्थान स्थापित होगा। इसमें पोलीईथेलीन उत्पादन के लिए आवश्यक ईथेलीन पैदा की जायेगी, इसके साथ ही फीनौल के संश्लेषण के लिए प्रोपाइलीन का उत्पादन भी होगा। बैन्जौल, जाइलौल, टूल्यौल के रूप में आरोमेटिकों के उत्पादन के लिए व्यापक इन्तजाम किया गया है।

१९५८ के मुकाबले में ईंधन का उत्पादन १९६५ में दुगना हो जायेगा। इस उद्देश्य से एक नया पेट्रोलियम शोध कारखाना आधुनिकतम प्राविधिक और उच्च उत्पादकता के आधार पर निर्मित हो रहा है। १९६५ तक इस कारखाने की क्षमता ४० लाख टन पेट्रोल का उत्पादन हो जायेगा। इस विकास का आधार पेट्रोलियम का बढ़ा हुआ आयात है, विशेषतः सोवियत संघ से, जो १९६५ तक ५० लाख टन होगा और सोवियत संघ से इसका परिवहन नलों द्वारा किया जायेगा।

इन आवश्यक कार्यों के साथ-साथ आधारभूत रसायनों के क्षेत्र में क्षमता बढ़ायी जायेगी। १९५८ के मुकाबले १९६५ में यह वृद्धि सल्फूरिक एसिड में १९० प्र.श., कास्टिक सोडा में १३७ प्र. श., फास्फोरस में २३९ प्र.श., नाइट्रोजन उर्वरकों में १३१ प्र. श. व फास्फोरस उर्वरकों में २०८ प्रतिशत, रासायनिक प्राविधिक उत्पादों जैसे फोटोग्राफी और सिनेमा फिल्मों में १७० प्रतिशत, लाख और चित्रकारी के सामान में २१५ प्रतिशत और रबर उद्योग जैसे मोटरों के टायरों में २३४ प्रतिशत होगी।

ज. ज. ग. का रसायन कार्यक्रम, और समूचे [illegible] खेमे का रसायन कार्यक्रम आपसी आर्थिक सहायता परिषद में प्रतिनिधित्व वाले तमाम देशों के समान आर्थिक और विज्ञान-प्रविधि-सहयोग द्वारा हासिल होगा। अलग-अलग देशों की भावी योजनाएं विशेषज्ञीकरण, सहयोग और श्रम के अन्तर्राष्ट्रीय विभाजन की बुनियाद पर संतुलित की जाती हैं। ये कदम केवल उत्पादन समस्याओं तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि उनका सहयोग विशेषज्ञता, शोध और विकास के क्षेत्र में अनुभव के आदान-प्रदान, उपकरणों के आयोजन व उत्पादन और रसायन उद्योग के नतीजों में भी होता है।

आपसी आर्थिक सहायता परिषद में भाग लेने वाले देशों के रसायन कार्यक्रम के विशाल कार्यों को पूर्ण करने में बहुत प्रयत्न की जरूरत होगी। इसकी सफलता निश्चित है क्योंकि शोषण से मुक्त समाजवादी देशों का श्रमिक वर्ग, सहयोगी बुद्धिजीवियों सहित, इन उद्देश्यों के लिए अपनी तमाम शक्तियों को दांव पर लगा देता है।
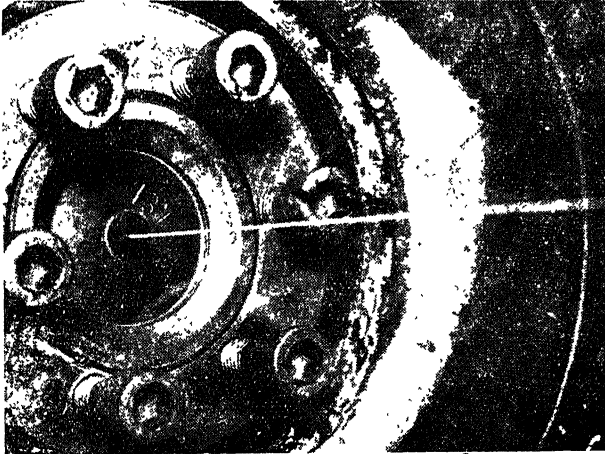
रासायनिक वस्त्र

"विलियम पीक" रासायनिक रेशा कारखाने की एक यात्रा

श्वारजा में रासायनिक रेशा उत्पादन प्लांट "विलियम पीक" के क्षेत्र में प्रवेश करते ही इस १.५ कीलोमीटर में फैले स्थान के आगन्तुक का स्वागत सुरम्य घास और पूर्णतया छंटाई की हुई झाड़ी की कतारों के द्वारा होता है। यहां जर्मन जनवादी गणराज्य के एक विशालतम रासायनिक रेशा उत्पादन केन्द्र की स्थापना की गयी है। कारखानों की हद में स्थित रूडोल्स्टैड शहर वहां काम करने वाले ५.००० लोगों की बहुसंख्या का निवास-स्थान बन गया है। साले नदी के किनारे-किनारे एक ओर मनोरम पहाड़ी भूमि है। दूसरी ओर विस्तृत हरे-भरे घास के मैदानों के साथ कारखाने का दृश्य बहुत ही सुहावना दिखाई देता है। प्लांट के क्षेत्र में तैरने के लिए एक बहुत ही सुन्दर तालाब है। यह गर्मियों के मौसम में तमाम श्रमिकों और कर्मचारियों का मुख्य आकर्षण है। इसमें एक ५० मीटर का बेसिन है जिसमें तैराकी के स्प्रिंगदार खेलों का इन्तजाम है और ५० मीटर लम्बा एक सागरनुमा स्नान कक्ष है, जिसमें समुद्र सी लहरें उठती रहती हैं। सैकड़ों स्नान करने वाले अपने मध्यान्ह कलेवा के समय और काम के बाद इनका आनन्द उठाते हैं। दिन भर के काम के बाद सागरनुमा स्नान कक्ष में बहुत आनन्द और आराम मिलता है।

श्वारजा के राष्ट्रीय स्वामित्व के कारखाने परम्परागत सैलूलोज के रेशे और कुछ सालों से "डेडीरोन" और "ट्रेलोन" के आधार पर बनाये गये रेशम के लिए सुविख्यात हैं। किन्तु इस बात का ज्ञान कम को ही है कि इसी प्लांट में कई सालों के शोध के बाद, ज. ज. ग. में पहली बार, पोलीईस्टर रेज़िन

(एक प्रकार का विरोजा) से प्राप्त "लनोन" नामक रासायनिक रेशा विक-सित किया गया । इन चार प्रकार के रेशों के अतिरिक्त "श्वारजा" कारखानों में कृत्रिम ऊन के उत्पादन के लिए आवश्यक सल्फूरिक एसिड (गंधक का तेजाब) और कार्बन डाई-सल्फाइड भी बनाये जाते हैं । देवदार के वृक्षों से प्राप्त सैलूलोज को कारखाने के बनावटी ऊन विभाग में कास्टिक सोडा में डाल दिया जाता है और इसके बाद तथाकथित विस्कोज घोल में कार्बन डाई-सल्फाइड के साथ परिवर्तित कर दिया जाता है । फिर सल्फूरिक एसिड में स्नान कराने के बाद इसे कृत्रिम ऊन के रूप में कात लिया जाता है ।

ज. ज. ग. में कृत्रिम ऊन के उत्पादन में काफी वृद्धि नहीं हुई है, क्योंकि कच्चा माल यानी लकड़ी यहां सीमित मात्रा में ही प्राप्त है । किन्तु दूसरी ओर पूर्णतया संश्लेषित रेशे यहां कृत्रिम ऊन से बेहतर किस्म के होते हैं । यही कारण है कि यहां उत्पादित "वोलक्राइलोन," "प्रीलाना," "व्यालान" "डेडीरौन," "ट्रीलौन", और "लैनौन" नामक संश्लेषित रेशे भविष्य में रासायनिक रेशों के बाजार में प्रमुख स्थान ग्रहण कर लेंगे । ज. ज. ग. के रासायनिक कार्यक्रम में संश्लेषित रेशों के उत्पादन को १९६५ तक ४ गुना से भी अधिक बढ़ा देने की संभावना रखी गयी है । श्वारजा कारखानों के उत्पादन में से संश्लेषित रेशों का उत्पादन ५४ प्रतिशत है, जब कि विस्कोज रेशों की मात्रा ३८·३ प्रतिशत है ।

१९६५ तक उम्दा "डेडीरोन" रेशम का उत्पादन भी दुगना हो जायेगा । मुख्य उत्पादन के अतिरिक्त श्वारजा प्लांट में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डाक्टर लुडविग के निर्देशन में एक परिपूर्ण शोध विभाग भी स्थित है । यह शोध विभाग नये प्रकार के रेशों के शोध और विकास में लगा रहता है । दूसरी वस्तुओं के साथ कई "डेडीरोन" किस्म के प्रोफाइल रेशम विकसित हो चुके हैं । उदाहरण के लिए खोखले प्रकार के प्रोफाइल रेशम में ऊंचे दर्जे के थर्मल गुण पाये जाते हैं । शोध विभाग ने "लेनौन" रेशे के विकास से लेकर उसके प्रथम उत्पादन करने में सबसे बड़ी सफलता प्राप्त की । "लेनौन" पोलीईस्टर रेजिन का एक उत्पाद है । डाइमीथाइल टैरैफ्टैलिक—मोनेवेलेंट आलकोहल, मोथानौल व पेट्रोकेमिकल टेराफ्थैलिक एसिड के ईस्टरीकरण से प्राप्त—बाइवेलेंट आल-कोहल ग्लाइकोल के साथ यौगिक होकर एक पोलीमर बनता है, जो अपनी बहु अणुविक बनावट के कारण वे गुण रखता है जो कताई के लिए उपयुक्त वस्तु में होने चाहिएं । 'लेनौन" रेशे का आवश्यक टेक्सटाइल लाभ यह है कि यह न तो सिकुड़ता है और न इस पर पानी का असर होता है । लेनौन की बनी
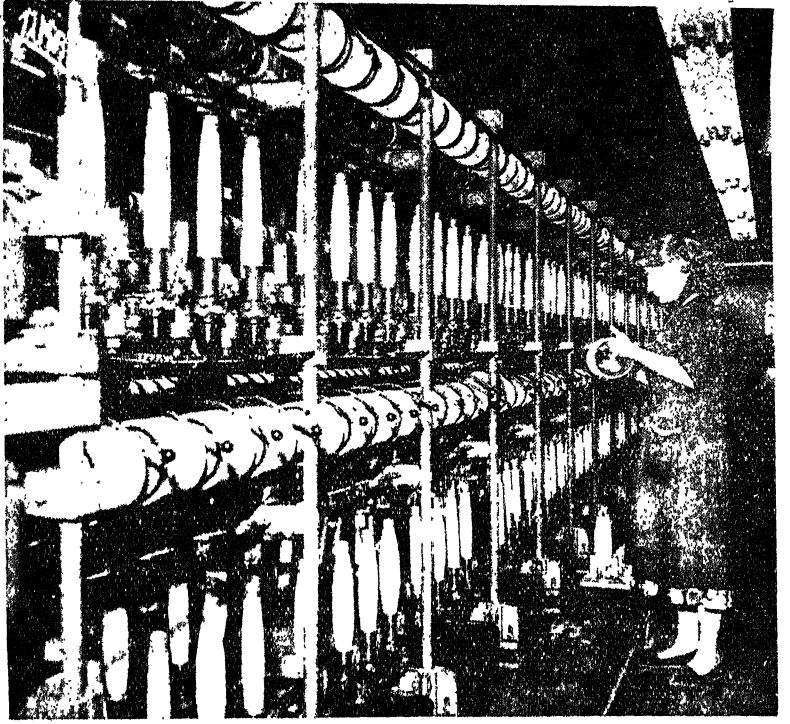
समाजवादी श्रमिक टुकड़ी की एक व्यस्तकपड़ा मजदूरिन

पोशाक वर्षा की भारी बौछार को भी झेल सकती है, क्योंकि इसका तंतु जरा भी नमी नहीं सोखता। इस बीच प्राविधिक उपकरण विकसित कर लिये गये हैं कि श्वारजा कारखानों का उत्पादन हर साल १५० मीटरिक टनों तक पहुँच जाये।

इस समय ब्रेंडेनबर्ग जिले में प्रेमनिज़ के कृत्रिम रेशम के कारखानों के उत्पादन के लिए एक और प्लांट निर्मित किया जा रहा है। इस प्लांट की क्षमता २,००० मीटरिक टन प्रति वर्ष होगी। यह प्लांट श्वारजा की शोध टीम ने विकसित किया है।

"लेनौन" रेशे से भी अधिक महत्व "लेनौन" रेशम को दिया जा रहा है, जिसे रासायनिक कार्यक्रम की उपलब्धियों की उचित संज्ञा देने के अनेक कारण मौजूद हैं। अभी हाल में श्वारजा में "लेनौन" रेशम का एक प्रायोगिक

प्लांट लगाने का काम हाथ में लिया गया है जो कि गुबेन में आगे स्थापित होनेवाले रासायनिक रेशा केन्द्र में हर साल १०,००० मीटरिक टन "लेनौन" रेशम के उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा ।

ज. ज. ग. का यह विशालतम रासायनिक रेशा उत्पादन प्लांट, जो ग्रोडर नदी के किनारे गोबेन में निर्मित हो रहा है, १९६२ में २००० मीटरिक टन की प्रारम्भिक उत्पादन क्षमता सहित अपना उत्पादन कार्य प्रारम्भ कर देगा । इतने विशाल उत्पादन प्लांट को कायम करने के लिए आवश्यक ज्ञान और अनुभव की प्रशिक्षा श्वारजा कारखाने में उन केमिस्टों, इंजीनियरों और उच्चत्तम योग्यता प्राप्त कुशल कारीगरों को, जो अगले साल गुबेन जा कर काम संभालेंगे, अभी से दी जा रही है । जर्मन ज. ग. में रासायनिक कर्मचारियों की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है ।

अनुभव प्राप्त विशेषज्ञों के निर्देशन में श्वारजा प्लांट में एक प्राविधिक कालेज स्थापित हुए काफी दिन हो गये हैं । उसने प्राविधिक प्रशिक्षा केन्द्र के रूप में अब काफी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है । कुशल मजदूरों के लिए यहां छमाही पाठ्य-क्रम है जिसमें वे इन-आर्गेनिक व आर्गेनिक रसायन, विशेष गणित, भौतिक प्लांट व्यवस्था और प्लांट अर्थ–व्यवस्था का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करते हैं । तमाम विभागों में शिक्षा की समाप्ति एक परीक्षा पत्र द्वारा होती है, जिसे राज्य की स्वीकृति मिलती है ।

हमें श्वारजा रेशा प्लांट के श्रमिकों और क्लर्कों के लिए उपलब्ध सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थानों को भी नजरन्दाज नहीं करना चाहिए । स्वास्थ्यवर्धक सफाई और थिरैप्यूटिक चिकित्सा के लिए सभी व्यवस्थाओं और औजारों से लैस यहां एक आधुनिक उपचार अस्पताल है । इसमें प्लाट के कर्मचारियों के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए ६ डाक्टर स्थायी सेवा के लिए तैनात रहते हैं । यहां की चिकित्सा के बाद स्वास्थ लाभ के लिए बाल्टिक के सुप्रसिद्ध स्थान आहेलबक में प्लांट का अपना विश्राम निवास है जहां कई सप्ताहों के लिए बारी-बारी से कारखाने के समस्त कर्मचारी जा सकते हैं ।

साथ ही प्लांट का अपना क्लब मनोरंजन और दिल-बहलाव में साथी होता है । नाट्य प्रदर्शन, गान और सिनेमा के कार्यक्रम साहित्यिक आयोजनों और सहज वैज्ञानिक वार्ताओं के साथ सुनियोजित क्रम में प्रस्तुत किये जाते हैं । शायद ही कोई शाम ऐसी होती होगी जिसमें क्लब खचाखच भरा न रहता हो ।

मजदूरों के लिए सागर-नुमा स्नान-कक्ष ।

एक विशाल कैन्टीन में उत्तम, पौष्टिक एवं सुस्वादु मध्यान्ह भोजन का प्रबन्ध होता है। प्लांट के नित के भोजन में तीन सुस्वादु भोज्य होते हैं। इसके लिए श्रमिकों को बहुत थोड़ी रकम देनी होती है। प्लांट के प्रबन्धकों द्वारा सामाजिक फंड से इसके लिए काफी धन दिया जाता है। यहीं से काम के स्थान पर आने-जाने का खर्चा दिया जाता है, क्योंकि कुछ कर्मचारियों को हर रोज काफी दूर से आना पड़ता है। आस-पास के कई कस्बों और गांवों में कारखाने की बसें आती-जाती हैं जिनमें मजदूरों के आने-जाने का प्रबन्ध होता है। जिन लोगों को रेलों से आना-जाना पड़ता है, उन्हें बहुत कम किराया देना पड़ता है। उन्हें मुश्किल से कुल किराये का १० प्रतिशत देना पड़ता है।

श्वारजा के रासायनिक रेशा प्लांट "विलियम पीक" में मजदूरों को जो सहूलियतें प्राप्त हैं, वे आम तौर पर ज. ज. ग. के बहुत से दूसरे बड़े औद्योगिक प्लांटों के मजदूरों को भी मिलती हैं।

शिक्षा का विकास

प्रो० आलफ्रेड लैमनित्ज़

राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री

गत दशक में ज. ज. ग. ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सफलता प्राप्त की है। फ़ासिस्ट तानाशाही के खात्मे के बाद जर्मनी के इतिहास में पहली बार जनवादी शिक्षालय कायम हुए और सभी बच्चों के लिए शिक्षा की सुविधा समान रूप से उपलब्ध हुई। पहले तो केवल सौ में से पांच बच्चे स्कूल जाने का मौका पाते थे। लेकिन अब माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं में मजदूर-किसानों के बच्चों की संख्या सौ में पचास से भी ज्यादा है। जनवादी शिक्षा संस्थाओं के सामने काम रखा गया कि सभी बच्चों को इस प्रकार से सर्वांगीण ज्ञान प्रदान किया जाय कि वे हमारे जीवन के सुधार तथा सभी का भविष्य सुन्दर बनाने के महायज्ञ में सफलता के साथ योग दे सकें!

इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर नया पाठ्यक्रम व नयी पाठ्य-पुस्तकों की रचना करनी पड़ी। १९५१ में नया पाठ्यक्रम सभी शिक्षा संस्थाओं के लिए आवश्यक बना दिया गया। साथ ही यह व्यवस्था की गयी कि पांचवीं कक्षा से आगे हर विषय के लिए विशेषज्ञ शिक्षक हों ताकि विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा मिल सके। विद्यार्थियों की शिक्षा व प्रगति का हर वर्ष इम्तहान होने लगा। इस तरह से सभी शिक्षालयों में शिक्षा का स्तर ऊंचा उठ गया। गांवों में भी स्कूलों का स्तर ऊंचा उठ गया और कोशिश की गयी कि शहरों के बराबर हो जाय। इस तरह से पुरानी प्रतिक्रियावादी पद्धति के जो १९४५ में ४११४ स्कूल थे, उनकी संख्या घटकर केवल १७ रह गयी। यही एक बात दिखाती है कि पूर्वी जर्मनी की शिक्षा पद्धति पश्चिमी जर्मनी से ज्यादा बढ़िया है—पश्चिमी जर्मनी में तो पुरानी तरह के स्कूलों की संख्या बराबर बढ़ती जा रही है, और

अब आठ हजार तक पहुँच गयी है । जर्मनी में शिक्षा व्यवस्था में यह सबसे बड़ी बुराई थी कि शिक्षा का दैनिक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं था, न उत्पादन सम्बन्धी विषयों की पढ़ाई होती थी । सारा जोर किताबी ज्ञान पर दिया जाता था। इस समझ ने कि समाजवादी निर्माण के लिए ऐसे विद्यार्थियों का होना जरूरी है जिनका बौद्धिक व शारीरिक विकास सर्वांगी हो, ज.ज. ग. की शिक्षा व्यवस्था को समाजवादी दिशा में आगे बढ़ने के लिए मजबूर कर दिया। अब यह जरूरी हो गया कि शिक्षा का कार्य उत्पादन के कार्यों से जोड़ दिया जाय ताकि विद्यार्थियों को पोलीटेकनीकल ज्ञान प्राप्त हो सके, उनकी योग्यता बढ़ सके, नयी से नयी टेकनीकल जानकारी मिल सके, रचनात्मक कार्यों के लिए लगाव पैदा हो सके और मजदूरों के लिए सम्मान की भावना आ सके। समाजवादी उत्पादन में तो नयी से नयी टेकनीक इस्तेमाल होती है, नये से नये वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग होता है । इसके लिए जरूरी है मजदूरों-किसानों के टेकनीकल व वैज्ञानिक ज्ञान का स्तर उतना ही हो जितना टेकनीशियनों व इंजीनियरों व कृषि-विज्ञान के जानकारों का होना चाहिए । न तो साधारण आठ-वर्ग वाले माध्यमिक स्कूल और न बारह-वर्ग के स्कूल ही शिक्षा का स्तर ऊंचा हो जाने पर भी यह काम पूरा कर सकते थे । इसलिए यह तय हुआ कि १९६४ तक इस प्रकार के पोलीटेकनीकल स्कूल क्रमानुसार कायम किये जायें जहां साधारण शिक्षा दी जा सके और बर्लिन तथा हॉले जैसे क्षेत्रों में, जहां उद्योग व कृषि अधिक विकसित हैं, यह काम १९६१ तक पूरा हो जाना चाहिए।

१९५८ में पहली सितम्बर से पोलीटेकनीकल शिक्षा में यह महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया कि सात से दस या सात से बारह वर्ष के वर्गों में सप्ताह में एक दिन उत्पादन का काम कराया जाने लगा। इस एक दिन विद्यार्थी उत्पादन के लिए अपने उस ज्ञान को प्रयोग में लाते हैं जो पढ़ाई के दौरान में वे प्राप्त करते हैं और इस तरह से वे अपने अनुभव से नया ज्ञान प्राप्त करते हैं । हमारे कुछ तथाकथित शुभचिंतक कहते हैं कि विद्यार्थियों को सप्ताह में एक दिन उत्पादन के काम में लगाकर हम बच्चों से मजदूरी कराते हैं । बात यह नहीं है। असल में उस एक दिन किताबी ज्ञान को व्यावहारिक ज्ञान का रूप दिया जाता है, सिद्धांत व व्यवहार की एकता स्थापित की जाती है । इस एक दिन के सम्बन्ध में नियम बना दिये गये हैं और क्या काम विद्यार्थियों से कराया जाय, यह तय कर दिया गया है। साथ ही उनको विभिन्न विज्ञानों की जानकारी भी करायी जाती है । इस तरह सातवीं कक्षा को धातु का सामान बनाने का ज्ञान, आठवीं कक्षा वालों को मैकेनिकल विज्ञान तथा बिजली के विज्ञान का
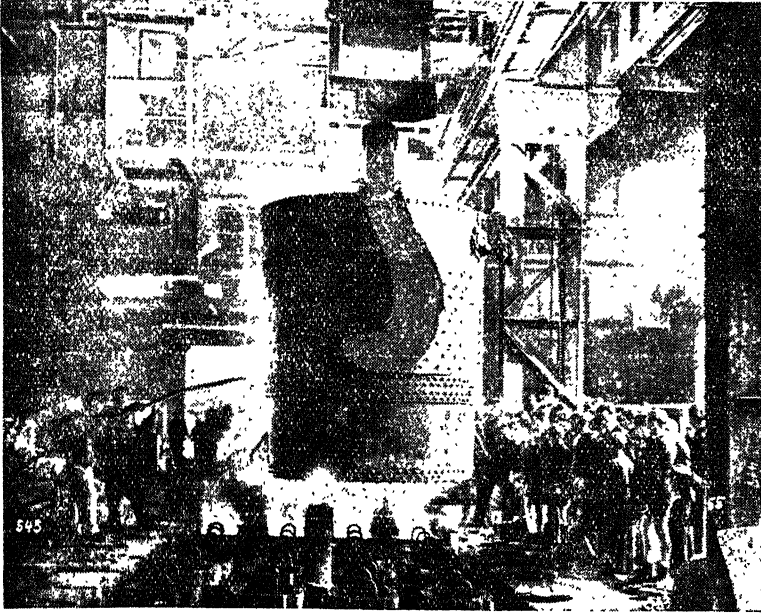
विद्यार्थियों को उत्पादन कार्य का व्यावहारिक ज्ञान कराया जा रहा है

ज्ञान, नवीं कक्षा वालों को कृषि उत्पादन का ज्ञान और दसवीं कक्षा वालों को उच्चतर मैकेनिकल विज्ञान का ज्ञान कराया जाता है।

शिक्षा के प्राथमिक पाठों के साथ उद्योग व कृषि की प्रारम्भिक समस्याओं के ज्ञान को जोड़ कर अब पढ़ाई होती है। इसके लिए अध्यापकों व विशेषज्ञों के बीच घनिष्ट सहयोग स्थापित किया गया है। स्कूलों में पोलीटेकनीकल सलाहकार समितियां हैं जिनमें अध्यापकों के अलावा मजदूर, सहकारी कृषक, टेकनीशियन व डाक्टर होते हैं और वे बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव डालते हैं।

व्यावहारिक ज्ञान उन स्कूलों में भी दिया जाता है जहां तीन से छः वर्ष तक के बच्चे किंडरगार्टन पद्धति से शिक्षा पाते हैं या पहली से छठी कक्षा के विद्यार्थी पोलीटेकनीकल पद्धति से विद्या पाते हैं। किंडरगार्टन स्कूलों में बच्चों को साधारण रूप से हाथ पैर चलाने का काम कराया जाता है और इंजीनियरिंग में उनको टेकनीकल खिलौने के जरिए दिलचस्पी पैदा की जाती है।

पोलीटेकनीकल शिक्षा के सिलसिले में वैज्ञानिक तथा अन्य विषयों की शिक्षा में भी सुधार हुआ है। हर स्कूल के उन कमरों में जहां विषयों को

पढ़ाया जाता है, लैबोरेटरी कायम कर दी गयी है। इस बुनियादी तबदीली के लिए भी पाठ्यक्रम बदलना पड़ा। १९५८–५९ के अन्त में तथा नया पाठ्य-वर्ष आरम्भ होने से बहुत पहले हर अध्यापक को नये पाठ्यक्रम की एक प्रति दे दी गयी ताकि वह स्कूल खुलने से पहले अपने को नये ढंग से पढ़ाने के लिए तैयार कर सके। पहली सितम्बर १९५९ को नया पाठ्यक्रम लागू हो गया और साथ ही इसके लिए कायदे बन गये। नया पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के मानसिक व शारीरिक विकास के बीच की खाई को पाटता है और शिक्षा का स्तर ऊंचा उठाता है। दस कक्षाओं के साधारण पोलीटेकनीकल स्कूलों के अलावा बारह कक्षाओं के उच्च-स्तरीय पोलीटेकनीक भी हैं। यहां से पास होने पर एक वर्ष का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी अपने पेशे के उच्च स्कूल, कालेज या विश्वविद्यालय में चले जाते हैं।

जर्मन जनवादी गणराज्य की राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति इस प्रकार है :

१. ३ से ६ वर्ष तक के बच्चों के लिए किंडरगार्टन।

२. सभी लड़कों के लिए दस कक्षाओं के पोलीटेकनीकल माध्यमिक स्कूल।

३. माध्यमिक स्कूल पास करने के बाद किसी पेशे में विशेष शिक्षा दी जाती है। कम से कम दो वर्ष की विशेष शिक्षा पाने के बाद विद्यार्थी इस लायक हो जाता है कि वह किसी इंजीनियरिंग स्कूल या कालेज में भर्ती हो सके।

४. तीन वर्ष तक किसी पेशे के विशेष स्कूल या कक्षाओं में जाने और साथ ही उस पेशे की ट्रेनिंग लेने के बाद विद्यार्थी अन्तिम रूप से माध्यमिक स्कूल परीक्षा पास करता है और इस बात का हकदार हो जाता है कि वह किसी यूनिवर्सिटी या कालेज में दाखिल हो सके।

५. समाजवादी उत्पादन में एक वर्ष तक काम करने के बाद कोई भी छात्र बारह कक्षा वाले पोलीटेकनीकल स्कूल, पेशे के विशेष स्कूल या उच्च शिक्षालय अथवा यूनिवर्सिटी में शामिल हो सकता है।

इस प्रकार शिक्षा की जो सुविधाएं उपलब्ध हैं, इनके अलावा ऐसे मजदूरों के लिए दूसरी तरह के भी स्कूल हैं, जिन्होंने किसी माध्यमिक स्कूल में शिक्षा न पाई हो, जैसे कारखानों के स्कूल, सांध्यकालीन स्कूल और ऐसे पाठ्क्रम जो विश्वविद्यालय की तैयारी करा देते हैं।

१९६४ तक साधारण माध्यमिक स्कूलों के लिए जो योजना तैयार की गयी है, उसके अनुसार ६०० नये स्कूल कायम होने हैं और १२०० स्कूलों को फिर से बनाना है। स्कूलों के लिए ५४,००० कमरे बनने हैं, इनमें से १८००० ऐसे होंगे जहां विद्यार्थियों को विज्ञान की शिक्षा दी जायगी।

सामाजिक सुरक्षा

डा० माइशेल गर्हरिग

स्वास्थ उप-मंत्री

यह निर्विवाद सत्य है कि जनता का स्वास्थ्य अधिकतर चिकित्सा सेवाओं के काम और विशेष रूप से डाक्टरों के काम पर निर्भर है। परन्तु इन संबन्धों को और निकट से जांचा जाय तो फौरन मालूम होगा कि डाक्टरी देख-रेख की सफलता उन कई परिस्थितियों पर निर्भर है जो अकेले चिकित्सकों द्वारा नहीं प्राप्त की जा सकती हैं, अपितु वे राज्य और समस्त समाज के दायित्व हैं।

आधुनिक सफाई संस्थानों के निर्माण एवं विकास इन परिस्थितियों में जरूरी हैं। स्वास्थ्य रक्षा की चतुर्मुखी सफलता के लिए अच्छे चिकित्सकों, सर्वोत्तम आधुनिक औजारों और उच्चकोटि की वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का होना-मात्र ही गारंटी नहीं है। इनका फायदा तभी उठाया जा सकता है जब ये समूची जनसंख्या की पहुँच के भीतर हों।

अत: नागरिकों की सामाजिक स्थिति से स्वतंत्र डाक्टरी इलाज, बीमारी, कार्य से अशक्तता और बुढ़ापे में सामाजिक सुरक्षा—अर्थात विस्तृत अर्थों में सामाजिक सुरक्षा—इस बात से तय होती है कि कहां तक चिकित्सा शोध परिणामों का उपयोग समूची जनसंख्या द्वारा किया जा सकता है।

श्रमिक वर्ग के संघर्ष और शासक वर्ग द्वारा कुछ दांवपेंच की रियायतों के कारण इस समस्या से संबन्धित कुछ मुद्दे जर्मनी में एक सामाजिक बीमा कानून द्वारा, यद्यपि अपूर्ण रूप से, काफी पहले हल किये गये थे। तब से सामाजिक बीमा और सामाजिक सुरक्षा में कभी गलत भेद नहीं किया जाता है।

दुर्घटना या बीमारी के कारण अस्थायी या स्थायी अशक्तता के शिकार पश्चिमी जर्मनी के श्रमिकों के लिए कार्य की कोई सुरक्षा बाकी नहीं रहती।

जर्मन ज. गणराज्य में शोषण का उन्मूलन किया जा चुका है। विभिन्न प्रकार के फैक्टरी स्वास्थ्य संस्थानों की विस्तृत प्रणाली की सहायता से स्वास्थ्य की विस्तृत सुरक्षा हासिल की जा रही है। दुर्घटनाओं में हुई ३३ प्रतिशत की कमी इस ओर उठाये कदमों को प्रगट करती है। अगर कुशलता पर लगाये प्रतिबन्ध टूट भी जाएं, तो शारीरिक जोखम की मान्यता का पूर्ण अधिकार है। यह बात महत्वपूर्ण है कि शारीरिक चोट का कारण क्या है। इस बात की मान्यता के बजाय जोखम का अस्तित्व मान्यता का अधिकारी है। इस कानून का महत्व इस बात में है कि प्रत्येक वह व्यक्ति जो बुरी तरह से घायल या अशक्त हो गया हो, विशेष लाभ तथा अन्य सुविधाओं का—जैसे छटनी से सुरक्षा और राज्य की सहायता से काम पाने की सुविधाओं का अधिकारी है। प्रत्येक कारखाने को १० प्रतिशत अत्यंत अशक्त लोगों को काम पर रखना ही पड़ता है। अत्यंत अशक्त लोगों का तीन चौथाई से अधिक बड़ा भाग अशक्तता के बावजूद ज. ज. ग. में काम में लगा है।

एक स्वस्थ नयी पीढ़ी के विकास के लिए सामाजिक सुरक्षा के प्रबन्ध विशेष महत्व के हैं। बच्चों के भत्ते के अतिरिक्त ज. ज. ग. में १९५८ से जच्चाकाल में पूरे दिनों की छुट्टी और प्रसव के लिए आर्थिक सहायता देने की सुविधा प्रारम्भ की गयी। इसके लिए डाक्टर से नियमित मशविरा जरूरी हो गया। हर बीमाशुदा महिला प्रजनन के लिए अस्पताल या जच्चागृह का मुफ्त प्रयोग कर सकती है। कमजोर स्वास्थ्य वाली गर्भवती स्त्रियों को लोक कल्याण संस्थाओं की सहायता का मोहताज नहीं रहना पड़ता, वे राज्य-भवनों में स्वास्थ्य लाभ कर सकती हैं। पश्चिमी जर्मनी में प्रसव संबन्धित कारणों से हर आठ घंटे में एक मां की मृत्यु हो जाती है। १९५८ की इस मृत्यु रफ्तार से साबित होता है कि वहां यह घातक परिणाम सामाजिक सुरक्षा की कमी के कारण है। ज. ज. ग. में माताओं की मृत्यु की कहीं कम तादाद तथा शिशुओं की मृत्यु संख्या का १९५९ की पहली छमाही में ३.९ प्रतिशत घट जाना इस बात को साबित करता है कि सामाजिक सुरक्षा की गारंटी होने पर चिकित्सा कार्य की सफलताओं की संभावना कितनी बढ़ जाती है।

शिशुओं के स्वस्थ विकास के लिए महत्वपूर्ण दिवस-नर्सरियों का जिक्र करना भी जरूरी है। १९५९ के अन्त तक राज्य संस्थानों में ८४ नर्सरियां थीं। इनमें पूर्ण समय और फसल-के-समय के लिए प्रति दिवस-नर्सरी में तीन वर्ष से कम के १००० बच्चे थे। यह संख्या १९५० से १३ गुनी अधिक है।

स्वास्थ्य रक्षा में निरोधात्मक प्रबंध की पूर्णता एक ऐसी बात है जिसमें दो

क्षय रोगियों का एक चिकित्सालय

जर्मनियों का अन्तर सबसे ज्यादा उभर कर सामने आता है। ज. ज. ग. में बहुत बड़ी संख्या में ऐसे उपयुक्त संस्थान मौजूद हैं जहां ट्यूमर, डायोबेटिक, गर्भावस्था, माताओं के क्षय रोग आदि के निदान होते हैं। यहां मशविरा तथा विभिन्न निरोधात्मक दवाइयां निःशुल्क दी जाती हैं। इन संस्थानों में से कई सामाजिक भत्ते भी वितरित करते हैं। कई स्थायी केन्द्रों में मुफ्त रोग निरोधात्मक टीका व्यवस्था है। यहां एकदम आवश्यक टीके ही मुफ्त नहीं मिलते, अपितु स्वेच्छा से प्रयोग किये जाने वाले टीके, जैसे क्षय और पोलियोमिएलिटिस के टीके भी निःशुल्क प्राप्त होते हैं। पश्चिमी जर्मनी में जिस नागरिक को इनकी आवश्यकता होती है, उसे आंशिक मूल्य देना पड़ता है।

पश्चिमी जर्मनी के विपरीत पूर्वी जर्मनी में श्रमिकों और कर्मचारियों से सामाजिक-बीमा निधि में धन वसूल करने में कोई वृद्धि नहीं हुई है। बल्कि सामाजिक बीमा सेवाओं के कारण भत्तों में वृद्धि हुई है। १९५२ में फी व्यक्ति की औसत वृद्धावस्था पेंशन ९०.७० जर्मन मार्क मासिक थी। १९५९ के अंत

में यह राशि १४०.३६ जर्मन मार्क तक पहुँचा दी गयी । ज. ज. ग. में मजदूर और वेतनभोगी कर्मचारी के भत्ते में कोई अन्तर नहीं किया जाता। ज. ज. ग. में गैर-मजदूर कर्मचारियों को कोई विशेष रियायत नहीं दी जाती।

ज. ज. ग. में चिकित्सा पर होने वाले व्यक्तिगत व्यय की समस्या इस प्रकार हल की जाती है: बीमाशुदा व्यक्ति सामाजिक बीमा कम्पनी से चिकित्सा सहायता और दूसरी चिकित्सा सेवाएं मुफ्त हासिल करता है। इसके विपरीत पश्चिमी जर्मनी में, यद्यपि स्वास्थ्य सेवाओं के निमित्त तथाकथित धन राशि मौजूद है, परन्तु यदि चिकित्सक परेशानी से बचना चाहता है तो वह इस नियत राशि से अधिक किसी भी हालत में खर्च नहीं कर सकता है।

विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्य और नर्सिंग केन्द्रों में ६०,००० से अधिक स्थान पेंशनयाफ्ता और वृद्ध लोगों के लिए सुरक्षित हैं। इन स्वास्थ्यगृहों में रहने वाले निवास और भोजन के लिए केवल आधा खर्च देते हैं। उनके पास हमेशा कम से कम ३८ जर्मन मार्क रहते हैं।

पश्चिमी जर्मनी में श्लेष-विग-होल्स्टीन के धातु-कर्मचारियों ने १९५७ में अपनी जबर्दस्त हड़ताल के फलस्वरूप उन दिनों की तनखा का अधिकार हासिल किया था जिन्हें बीमा कम्पनी कानूनी तौर पर मान्य दिनों के अतिरिक्त काट लिया करती थी। इसके साथ ही उन्होंने ६ हफ्ते की तनख्वाह का मुआवजा अधिकार भी हासिल किया था। यद्यपि इस सौदे में उन्हें अधिक धन प्राप्ति का लाभ हुआ, तथापि यह सब डाक्टरी इलाज, चिकित्सा सहायता और अस्पतालों में उपचार के खर्चे में मजदूरों की साझेदारी की योजना लागू होने से समाप्त किया जाने वाला है।

ज. ज. ग. में ऐसे प्रतिबन्धों का प्रश्न ही नहीं उठता। ज. ज. ग. के अस्तित्व के दस वर्षों का अर्थ हैं सामाजिक सुरक्षा में वृद्धि के संघर्ष के सफल १० साल, काम पाने और बीमारी, अक्षमता या बुढ़ापे में वास्तविक सुरक्षा के अधिकार की गारन्टी।

ज. ज. ग. को अपनी चतुर्मुखी सफलताओं पर, विशेष कर स्वास्थ्य सेवाओं में प्राप्त सफलताओं पर गर्व है। चालू सप्तवर्षीय योजना इस संबन्ध में और भी उन्नत और महान कार्यों को जन्म देगी। तमाम नागरिकों की सामाजिक सुरक्षा को सम्भव बनाने और हासिल करने के लिए इन कार्यों की पूर्ति समूची जनता के सहयोग से होगी।

●

समाजवादी मानव तथा जीवन

प्रो. ली ग्रुंडिग

कलात्मक रचनाओं के नये स्रोत

मैंने प्रथम महायुद्ध के बाद के वर्षों में शिक्षा ग्रहण की। वे युद्धोत्तर-कालीन कठिनाइयों के अशान्तिपूर्ण दिन थे। उन कठिनाइयों से औद्योगिक बढ़ोतरी हुई, लेकिन कुछ ही दिनों में इस बढ़ोतरी ने संकट का रूप ले लिया। इस भयंकर संकट में लाखों आदमी बेकार हो गये और करोड़ों को तरह-तरह की यातनाओं का सामना करना पड़ा। उन दिनों कलाकारों का मजाक बनाया जाता था और एक प्रकार का पागल समझा जाता था, क्योंकि हम वह चीजें तैयार करते थे जिनका बाजार में कोई खरीदार नहीं था। वास्तव में उस समाज में हमारे लिए कोई स्थान नहीं था। हम दान पर रहते थे। कलाकारों को सहायता देने के लिए संघ बने थे और कलाकार इस तरह के मेलों का आयोजन करते थे जिनमें रईस आदमी कई प्रकार की तफरीह के लिए आते और भारी रकम उस तफरीह को लेने के लिए अदा करते। कलाकार ऐसे कमरों में रहते जो मकानों की छतों पर सामान रखने के लिए बनाये जाते थे और जिनमें उन के पास कोई चारपाई या मेज-कुर्सी नहीं होती थी। कलाकारों की प्रदर्शनियों में मुर्दाघाटों जैसा सन्नाटा छाया रहता था। ऐसी स्थिति में कलाकार इस विचार से अपने मन को संतोष दे लिया करते थे कि आखिर कला तो कला के लिए ही है। कला की कृतियों का थोड़े से समझदार लोग ही रसास्वादन कर पाते थे और बेचारी गरीब जनता को उनका आनन्द नहीं मिल पाता था। कलाकारों का रुख ऐसा था जिससे वे अपने-आप को भुलावे में रखते थे और अपनी घोर निराशा और दुखद कहानी को छुपाये रखते थे।

जर्मन जनवादी गणराज्य के अन्दर एक विचित्र सांस्कृतिक क्रान्ति हो रही है। पहले जिन चाहरदीवारियों ने कला व संस्कृति को मुट्ठी भर लोगों के लिए सुरक्षित कर रखा था, अब मजदूर वर्ग व मेहनतकश जनता उनको तोड़

रही है। हर दिन वे कला में रस ग्रहण करते जाते हैं और स्वयं संस्कृति के निर्माता बन रहे हैं। इस नयी परिस्थिति को न देखना अंधेपन के अलावा और कुछ नहीं है, क्योंकि यह परिस्थिति एक वेगवती नदी की तरह बढ़ती जा रही है।

मैं आठ वर्ष से संसद की सदस्या हूँ और संस्कृति के क्षेत्र में काम करती हूँ। मैं ने इस वेगवती नदी को आगे बढ़ते हुए देखा है—वह अपने अमर स्रोत से निरन्तर आगे की ओर बहती चली जा रही है। इस नदी के स्रोत को प्रथम महायुद्ध के पश्चात थोड़े समय के लिए बन्द किया जा सकता था।

मैं दोनों महायुद्ध के बीच के दिनों को पार कर अपने राजनीतिक कार्य के दौरान में नये मानव का जन्म देखने के लिए जीवित रही। नई वस्तुओं के निर्माण को देखना मेरे दैनिक जीवन का एक निरंतर अनुभव है। कलाकार की हैसियत से मैं जो कुछ रचना करती हूँ, उसका स्रोत यही अनुभव है। सभी मनुष्य अब रोज-रोज बदलते जा रहे हैं, नये प्रकार के मानव बनते जा रहे हैं, उनके साथ कलाकार भी बदल रहे हैं, वह नहीं रह पा रहे हैं जो पहले थे। हम आज अपनी कृतियों की प्रदर्शनी उसी प्रकार करते हैं जैसे अन्य लोग अपनी सफलताओं का प्रदर्शन करते हैं। हमारी कृतियों की आज लोगों को आवश्यकता है, लोगों में उनकी मांग है। और हम आलोचना को स्वीकार करना सीख रहे हैं, यह समझ रहे हैं कि आलोचना से सहायता मिलती है, आलोचना आवश्यक है। हम में से कुछ तो आलोचनाओं से शीघ्र ही शिक्षा ग्रहण कर लेते हैं, कुछ को सीखने में समय लगता है। यह ठीक है कि आलोचना में कुछ गलत बातें भी कही जाती हैं। यह भी ठीक है कि हम ऐसी गलतियां करते हैं जिनको खुद ही समझ लेते हैं। अभी विभिन्न कलाकारों की कृतियों में बहुत भिन्नता रहती है, एकरूपता नहीं है। लेकिन ससार निरंतर बदल रहा है और आज की गलतियां कल अवश्य ही ठीक हो जायेंगी। हर मनुष्य को कला की आवश्यकता है। यह आवश्यकता तेजी के साथ एक स्वाभाविक व परमावश्यक जरूरत का रूप धारण करती जा रही है। यह बात मैं स्पष्ट रूप से देख रही हूँ। मेरी और मेरे पति हांस की कृतियों को आसानी से समझना कठिन है, वे हर एक को पसंद नहीं आतीं। उनका रस लेने के लिए काफी चिंतन व मनन की आवश्यकता है। लेकिन अब हमारी रचनाओं को समझा जाने लगा है। यही नहीं, उनको मान मिलता है, उन्हें स्नेह से देखा जाता है। मैं समझता हूँ किसी भी कलाकार को इससे अधिक और किसी चीज में आनन्द नहीं प्राप्त हो सकता कि साधारण जनता उसकी रचनाओं से प्रभावित हो। यह आनन्द

उस एकाकीपन की भावनाओं पर विजय प्राप्त करता है, जो एक ऐसे कलाकार में पैदा हो जाना आवश्यक है जिनकी रचनाओं की कहीं मांग न हो।

मैं ड्रेसडन के ललित कलाओं के विद्यालय में शिक्षक हूँ। मैं और मेरे सहयोगी शिक्षक गांवों व कारखानों में बराबर जाते हैं। इन गांवों और कारखानों की शक्ल निरन्तर बदलती जा रही है। पहले कारखाने व जनता हमारे लिए एक दूर की दुनिया थे। अब हम अंधेरे कोनों में जाकर अकेले नहीं छुप जाते, अहंकार के पर्दे के पीछे अपने को छुपाने का प्रयत्न नहीं करते। आज तो हम जहां कहीं जाते हैं, वहीं हमारा घर हो जाता है। हमारे लिए कोई दरवाजा बन्द नहीं होता।

इस नये जीवन के अनुभव हमारे अन्दर विभिन्न रूपों में अदम्य आशावाद पैदा करता है। फासिज्म के दिनों में मैं जवान थी और उन दिनों मैं जितना अपमान व पतन देखती थी, उसी को अपनी कृतियों में व्यक्त करती थी। यदि मैं उस घोर अपमान व पतन को व्यक्त न करती, तो मेरा दम घुट जाता। लेकिन आज जब बुढ़ापा नजदीक आ रहा है और मुझे नये-नये अनुभव प्राप्त हो रहे हैं, तो मैं देख रही हूँ कि सारी जनता में एक नये प्रकार का मानवतावाद फैल रहा है, वह मानव को जन्म दे रही है। उसकी योग्यताओं व गुणों को पहले दबाया जाता था, लेकिन अब खुलकर व्यक्त होने का अवसर मिल रहा है। हमारा मजदूर-किसान राज्य रोज़-रोज़ सर्वतोमुखी मानव विकास व मानव को वास्तविक रूप से इन्सान बनाने के सपने को सजीव बना रहा है। इस अद्भुत प्रक्रिया की कलात्मक अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में होती है और इस को अंकित करना मेरी रचनाओं तथा मेरे जीवन का उद्देश्य है।

फिर भी मुझे एक चेतावनी देनी है। हमारे भविष्य के ऊपर काले बादल छाये हुये हैं। विध्वंसकारी और संहारक हथियार हत्यारों के हाथों में दे दिये गये हैं। हमें डटकर संघर्ष चलाना और इन हत्यारों को चकनाचूर करना है—इस संघर्ष से कोई अलग नहीं रह सकता। हमारा कर्तव्य यह है कि हम किसी को इस संघर्ष के प्रति उदासीन न रहने दें, जनता के डर को दूर करें, उनके भुलावे को खत्म करें।

मेरे सामने काम है कि इन हत्यारों को पहचानूं और दूसरों से उन्हें पहचनवाऊं ताकि हम उन्हें हरा सकें और हमारे देश में मानवजाति की मुक्ति का जो संघर्ष प्रारम्भिक अवस्थाओं में है, वह पूर्ण सफलता प्राप्त कर सके।

जर्मन जनवादी गणराज्य में हर वृद्ध की पूरी देख-भाल की जाती है। उपरोक्त चित्र में ऐसे ही एक वृद्ध पुरुष की साप्ताहिक डॉक्टरी जांच उसी के घर में हो रही है

पूर्णांतः नया जीवन

क्रुमके के पुनर्वासन केन्द्र की एक झांकी

ब्रिगिट्टे स्ट्रॉस ११ वर्ष की अवस्था में ही रोग के चंगुल में फंस गयी थी। तब से विगत १५ वर्षों में से १० वर्ष उसने क्षय-रोग चिकित्सालय में गुजारे हैं, आज जब ब्रिगिट्टे स्ट्रासका स्वास्थ पहले की अपेक्षा स्थायी रूप से काफी अच्छा है, वह अपनी जीविका कमा सकती थी अगर...।

यह "अगर" इस २६ वर्षीया रोगिणी के भविष्य के लिए एक बहुत बड़ी बाधा बन कर खड़ा था। लगातार लम्बी बीमारी के कारण ब्रिगिट्टे किसी भी प्रकार का व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त नहीं कर सकी थी।

"मैं घर में पड़ी-पड़ी अपने भाग्य पर रोती रहती थी," उसने अपनी कहानी सुनाते हुए हमें बताया। "आखिरकार एक दिन क्रुमके पुनर्वासन-केन्द्र का एक विज्ञापन मेरी नजरों से गुजरा, जो मेरे लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। मैंने अपनी स्थिति बताते हुए केन्द्र को पूरा विवरण भेजने के लिए लिखा। उत्तर में मुझे सूचित किया गया कि केन्द्र में मेरे लिए चिकित्सक-सहायिका के रूप में प्रशिक्षण की संभावना हो सकती है। मैंने प्रार्थना-पत्र भेजा, प्रवेश-परीक्षा पास की, और मुझे भरती कर लिया गया। मैं यहाँ आकर बहुत ही प्रसन्न हूँ।"

जिस भवन के कमरे में बातचीत हो रही थी, वह पहले एक "ग्राम निवास" था, जहाँ हम संवाददाता गण क्रुमके-केन्द्र तथा उसके उद्देश्य के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए आये थे। यह पुनर्वासन-केन्द्र—जो समूचे जर्मनी में अपने ढंग का अकेला केन्द्र है—लम्बी अवधि वाले क्षय-रोगियों को व्यवसायिक प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से कुछ ही वर्ष पहले खोला गया था। ब्रिगिट्टे से कुछ ही मिनटों की बातचीत से हम केन्द्र के क्रियात्मक तथा मनोवैज्ञानिक महत्व

को भलीभांति समझ गये । उसने अत्यंत उत्साह के लहजे में कहा : "मैंने जीने की इच्छा पुनः प्राप्त कर ली है ।"

क्रुमके-केन्द्र में एक वर्ष सिद्धांत-शिक्षण तथा एक वर्ष स्वास्थ्य-शाखा में क्रियात्मक अनुभव प्राप्त करने में लगता है । इसके बाद उम्मीदवार राज्यीय उपाधि प्राप्त करने के लिए परीक्षा में बैठने का अधिकारी हो जाता है। पाठ्य-क्रम काफी बड़ा है । चिकित्सा संबन्धी रसायन शास्त्र, शरीर-रचना-विज्ञान, जीवाणु-विज्ञान, सेरेलाजी तथा ऐक्सरे सम्बन्धी विज्ञान के अतिरिक्त जर्मन-भाषा, प्राणि-शास्त्र, पदार्थ-विज्ञान, रसायन-शास्त्र तथा अन्य विषयों का अध्ययन करना होता है। एक उच्च स्तरीय चिकित्सा-स्कूल के लिए इतना बड़ा पाठ्य-क्रम उचित ही है । इन विषयों के अलावा, क्रुमके के ६० विद्यार्थियों को स्वयं रोगग्रस्त होने के कारण पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त करने के लिए अपनी चिकित्सा के अन्तिम दौर में से भी गुजरना पड़ रहा है । यह स्पष्ट है कि इन परिस्थितियों में दैनिक कार्य-क्रम को कुशल ढंग से निर्धारित करना होता है। प्रतिदिन चार घंटे की विश्राम-चिकित्सा तथा प्रशिक्षणार्थियों के लिये अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धी आदेशों का पालन मुस्तैदी के साथ किया जाता है। अस्वस्थता के कारण केन्द्र छोड़कर बाहर जाने वाले प्रशिक्षणार्थियों की संख्या प्रति-वर्ष औसतन ३ रही है । इतनी कम संख्या का कारण यह है कि रोगियों की चिकित्सा पर विशेष ध्यान दिया जाता है । डा० कार्ल-हेन्ज वाल्सडोर्फ ने हमें दिलचस्प आंकड़ों की तालिका दिखाई, जिसके अनुसार ८७ प्रतिशत विद्यार्थियों के स्वास्थ्य में प्रगति हुई थी, जबकि ५ प्रतिशत के स्वास्थ्य में अस्थायी रूप में कुछ गिरावट आयी थी । लेकिन इतनी गम्भीर नहीं थी कि उन्हें अपना अध्ययन छोड़ना पड़े । केवल ८ प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों ने ही अपनी मौखिक परीक्षाओं के बाद क्रुमके छोड़ा था, क्योंकि वे नियमित रूप में अपना अध्ययन जारी रखने में स्वास्थ्य की दृष्टि से असमर्थ थे ।

अनुभव से सिद्ध हुआ है कि लम्बे अरसे तक निष्क्रिय रहने से विद्यार्थियों में अपने आपको दैनिक कार्य-क्रम-व्यवस्था में खपा देने की प्रवृत्ति आरम्भ में बहुत ही सीमित होती है । अध्ययन एक श्रमसाध्य कार्य है, और जब कोई लड़की परीक्षा में अपनी सफलता के बारे में शंका करने लगती है तो हमेशा सिस्टर मेडी (मुख्य नर्स) उसे संभालती और समझाती हैं ।

सिस्टर मेडी, जो स्वयं इस भावना का शिकार रह चुकी हैं, ऐसी लड़की की मनोभावना को भली-भांतिसम झती हैं। बीस वर्ष तक सिस्टर मेडी क्षय रोगिणी

रही हैं, और उनका सिद्धान्त है कि दया-भावना रोगी के लिए अच्छी न होकर घातक है। "निराशा और पलायन ? मैं सोच भी नहीं सकती। अपनी एक्सरे सहायिका को ही देख लो—इस समय वह सर्व-श्रेष्ठ कार्य-कर्त्री है।" इर्मगार्ड ब्रुनिग, पुनर्वासन-केन्द्र की स्नातिका हैं। वह क्रुमके-केन्द्र की शिक्षाओं तथा सिद्धान्तों की प्रतिछवि हैं। वह अपनी अन्तिम परीक्षा में विशेष सम्मान के साथ उत्तीर्ण हुई हैं।

हमने निर्देशक से एक्सरे तथा प्रयोगशाला के अध्ययन-कक्ष देखने की आज्ञा प्राप्त की, जहां प्रशिक्षण के लिए अनुभवी शिक्षक नियुक्त हैं। यहां पूरा साजो-सामान तथा अन्य प्रसाधन आधुनिकतम प्रकार के हैं। हमने केन्द्र के आश्चर्यपूर्ण कार्य को देखा और इतनी जानकारी प्राप्त की कि उसके सविस्तार विवरण में इस पुस्तक के और कितने ही पृष्ठ लग सकते हैं। यह कहना पर्याप्त होगा कि केन्द्र के निरीक्षक डा० हेन्स व्होलरेब के बिना केन्द्र न तो इतनी तेजी के साथ प्रगति ही कर सकता था, और न ही वह अपनी इस छोटी सी आयु में इतना सफलीभूत हो सकता था। अपने रोगियों में पूरी तरह से लीन डा० व्होलरेब, कर्तव्य परायण व्यक्ति हैं। उनका लक्ष्य है—क्षय जनित अकर्मण्यता की समस्या के उच्छेदन में सहायता करना। उन्होंने अपने कार्यों के प्रति संशय-शील व्यक्तियों के विरुद्ध अपनी योजना को सफल बनाने में विजय पायी। आज वे संशयशील व्यक्ति भी मान गये हैं कि इस प्रणाली ने रोगी विद्यार्थियों के लिए जीविकोपार्जन का एक नया द्वार खोल दिया है।

इस संदर्भ में 'पुनर्वासन' शब्द का अर्थ है, रोगियों को सामान्य जीवन की गतिविधियों में पुनः दीक्षित करना। ब्रिटेन तथा अन्य देशों में भी इस क्षेत्र में आरम्भिक कार्य किया गया है। परन्तु इस कार्य के लिए सरकार की ओर से बहुत बड़ी आर्थिक सहायता अपेक्षणीय है, जो इन देशों में बहुत अपर्याप्त है। बहुत सी ऐसी योजनाएं असफल हो गयीं, क्योंकि क्षय-रोगियों की ऐसी वस्तियाँ बसाने के प्रयत्न, जहाँ वे सबसे अलग-थलग रह कर काम करते हुए अपना शेष जीवन गुजारने के लिए रखे जाते थे, लोकप्रिय नहीं हो सके।

जर्मन जनवादी गणराज्य में पुनर्वासन-कार्य अभी ठीक तरह से आरम्भ भी नहीं हुआ है। परन्तु सरकार की आर्थिक सहायता से क्रुमके-केन्द्र तथा दूसरे क्षय-चिकित्सालयों में जो कुछ कार्य हो रहा है, उसका उद्देश्य क्षय-रोगियों से इस भावना को निकाल बाहर करना है कि वे समाज पर बोझ हैं।

चलचित्रों का निर्माण

जोशिम राईशौ

गत ७ अक्तूबर को जर्मन जनवादी गणराज्य की दसवीं वर्षगांठ के साथ ही ज. ज. ग. की राष्ट्रीय फिल्म कम्पनी की तेरहवीं वर्षगांठ मनायी जायगी। यह कम्पनी राष्ट्र की संपत्ति है और अब से तेरह वर्ष पहले इसने अपना पहला फीचर फिल्म "हत्यारे हमारे बीच में हैं", बनाया था। इस दौरान में इस कम्पनी ने १७० फिल्म अपने बाबेल्सबर्ग और जोननिस्टाल स्थित स्टूडियो में तैयार किये जो जर्मनी में व जर्मनी के बाहर प्रदर्शित किये गये हैं। सलाटान डुडौ और कुर्ट मैटजिग की कृतियां सारे संसार में विख्यात हैं। कुछ नयी पीढ़ी के निर्माताओं के चित्रों से भी सभी देशों के दर्शक परिचित हैं।

१९४६ में पूंजीवादी नियन्त्रण से मुक्त होकर और नये प्रकार का उत्पादन शुरू करके इस कम्पनी ने अब तक १७० फिल्म तैयार किये हैं। सबसे पहले चल-चित्र वोल्फसांग स्टौडर का "हत्यारे हमारे बीच में हैं" और कोनराड वोल्फ का "सितारे" सड़कों पर और टूटे हुए मकानों में तैयार किये गये थे। लेकिन अब तो सिनेमास्कोप और त्रिअंगी (थ्री ड्राइमैनशन्स) चित्र बनने लगे हैं। इस कम्पनी को इतनी लम्बी यात्रा करने में सफलताएं भी मिलीं और मुसीबतों का भी सामना करना पड़ा। इसकी प्रथम कृतियों में ("हत्यारे हमारे बीच में हैं" और कुर्ट मैटजिग द्वारा निर्मित "अंधेरे में शादी") समरवाद व फासिस्टशाही की समस्याओं को उठाया गया था और दिखाया गया था कि उनसे लड़ते हुए भी जनता में आत्मविश्वास और नये सुन्दर जीवन का निर्माण करने की आकांक्षा कितनी प्रबल रहती है। कुर्ट मैटजिग की दूसरी कृति "पलंग की चादर" में एक जर्मन श्रमिक के परिवार की तीन पीढ़ियों के इतिहास को लिया गया था। सलाटान डुडौ के चित्र

"हमारी रोजाना की रोटी" में तत्कालीन समस्याओं को उठाया गया था और दिखाया गया था कि युद्धोत्तर काल में आदमी को पेट भरने के लिए क्या-क्या संघर्ष करने पड़ते थे। तत्कालीन समस्याओं के ऊपर यह पहला चित्र था। इस चित्र को राष्ट्रीय फिल्म कम्पनी के इतिहास में विशेष स्थान प्राप्त है। मार्टिन हैलवर्ग का फिल्म "वह गांव जिसकी निंदा की गयी," कुर्ट और जीन स्टीन की एक पुस्तक के आधार पर तैयार की गयी थी। उस में तत्कालीन समस्याओं को उठाया गया है और दिखाया गया है कि किस प्रकार युद्धोत्तर काल में पश्चिमी जर्मनी में पुनःशस्त्रीकरण और बदला लेने की नीति को आगे बढ़ाने के लिए मार्ग प्रशस्त किया गया।

डुडौ के चित्र "रात्रि से अधिक बलवान" में फासिस्टशाही रूपी रात्रि में ईमानदार देशभक्त बहादुरी से हिटलरी शासन के विरुद्ध लड़ते हुए दिखाये गये हैं। कुर्ट मैटजिग के निर्देशन में बने जर्मन मजदूर नेता अर्नस्ट थैलमान के जीवन सम्बन्धी दोनों फिल्म तथा "नाविकों की जीत" नामक चळचित्र और कुर्ट जुंग-आलसेन के चित्र "पोलोनिया एक्सप्रेस" जर्मनी के मजदूर आन्दोलन के इतिहास के निर्णयकारी अध्यायों से संबन्ध रखते है। इन चारों चित्रों से पुराने भ्रम दूर होते हैं और स्पष्ट मालूम होता है कि समाजवाद की विजय अनिवार्य रूप से होगी।

कोनराड वोल्फ द्वारा निर्मित "बीमारी का इलाज", "लिस्सी", "सितारे" तथा हैयनर कैरो के चित्र महत्वपूर्ण, मानवतावादी फिल्म थे जिनमें फासिज्म के नतीजों को दिखाया गया है और बताया गया है कि किस प्रकार फासिस्ट ताकतों को बढ़ाने से रोका जा सकता है। सलाटान डुडौ के रहस्यपूर्ण चित्र "कोलोन का कप्तान" दिखाता है कि पश्चिमी जर्मनी में किस तरह वे लोग ताकत में आ रहे हैं जो गत महायुद्ध के लिए जिम्मेदार थे। कुर्ट मैटजिग ने अपने फिल्म "महल और झोपड़ी" में ज. ज. ग. के विकास का चित्रण मार्मिक ढंग से किया है।

इन फिल्मों ने फिल्म जगत के अन्दर इस कम्पनी की प्रतिष्ठा स्थापित कर दी। लेकिन इनके अलावा बच्चों व नौजवानों के लिए विशेष फिल्में, ऑपेरा व ऑपेरेटाओं के चित्र, जर्मन व विदेशी भाषाओं के महान ग्रन्थों के आधार पर तैयार किये हुए फिल्म तथा ऐतिहासिक व जीवन चरित संबन्धी चलचित्र भी इस कम्पनी ने बड़ी संख्या में बनाये हैं।

पिछले तेरह वर्षों में इस कम्पनी के सामने मुख्य समस्या यह रही है कि किस तरह से जर्मनी के दुखद इतिहास को चित्रित किया जाय। समकालीन समस्याओं से संबन्धित चित्र बहुत अच्छे नहीं बन पड़े—विशेष रूप से समाज-

"सितारे"
फल्म का
एक दृश्य

वादी निर्माण काल के प्रारंम्भिक दिनों में तैयार हुए फिल्म। इन चित्रों में ज. ज. ग. के नवजीवन तथा पुर्ननिर्माण को पूरी तरह से अंकित नहीं किया जा सका। कम्पनी की दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर पोटसडम—बाबेलसबर्ग फिल्म कालेज के डायरेक्टर हांस रोडनबर्ग ने लिखा था कि यह तो सही है कि हमें ऐतिहासिक चलचित्रों की भी आवश्यकता है। उनके बनने में अधिक समय लगता है और ज्यादा धन खर्च होता है। लेकिन हमारी रोजाना की जरूरतें तो ऐसे चित्रों से पूरी होंगी जिनमें लेखक, निर्माता और अभिनेता आजकल की समस्याओं पर ध्यान दें।

१९५८ में ज. ज. ग. में फीचर फिल्मों के उत्पादन से सम्बन्धित एक सम्मेलन हुआ, जिसमें समाजवादी विषयों पर ऐसे फिल्म बनाना तय हुआ। सम्मेलन में जो प्रस्ताव पास हुआ, उसमें कहा गया कि समाजवादी निर्माण से सम्बन्धित समस्याओं को लेकर फिल्म बनने चाहिए। विशेष रूप से इन समस्याओं की तरफ ध्यान खींचा गया—मजदूरों के संघर्ष, वर्तमान तथा भूतकाल में समाजवाद के मार्ग पर चलने में उठने वाले सवाल, समाजवादी नैतिकता, मजदूर-किसान युवकों का नया दृष्टिकोण, मजदूर स्त्रियों की नयी स्थिति, गांवों व शहरों के बीच बढ़ते हुए पारस्परिक सहयोग के सम्बन्ध तथा रोजमर्रा के जीवन की इसी प्रकार की समस्याएं। प्रस्ताव में यह भी कहा गया कि साम्राज्यवाद, समरवाद और पश्चिमी जर्मनी की फासिस्ट शक्तियों का भी फिल्मों में रहस्योद्घाटन किया जाना चाहिए। ज. ज. ग. संस्कृति सम्बन्धी विषयों के मंत्री अलेकजेंडर एबुश ने कहा कि इस प्रकार की फीचर फिल्में बनाने में योग देने वाले सभी लोग राष्ट्र सेवी समझे जायेंगे।

"वह गांव जिसकी निंदा की गयी" नामक चलचित्र का एक दृश्य

दसवीं वर्षगांठ के समय जो चित्र दिखाये गये, उनसे पता चलता है कि सम्मेलन की सिफारिशों पर विचार किया गया है। राष्ट्रीय फिल्म कम्पनी के उत्पादन में जो मोड़ आया है, वह ज. ज. ग. की दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर दिखाये गये जान्स आर्पे द्वारा निर्मित "एरिच कूबाक" तथा फ्रैंक बेंयर द्वारा निर्मित "एक पुराना प्रेम" नामक चित्रों में स्पष्ट दिखाई देता है। इन चित्रों में कृषि उत्पादन सहकारी समितियों के अन्दर चल रहे वाद-विवादों का चित्रण किया गया है। १२ वर्ष पहले जब राष्ट्रीय फिल्म कम्पनी का पहला चित्र दिखाया गया था, तब से आज तक बने फिल्मों को देखने से पता चलता है कि कभी-कभी कमजोरियां भले ही आयी हों और गलतियां भी हुई हों, लेकिन आम तौर से फिल्म उत्पादन सही रास्ते पर चला है।

राष्ट्रीय फिल्म कम्पनी का काम है कि आगे भी देश का प्रतिनिधित्व करने वाले अच्छे फिल्म बनाये; सबसे अच्छे और प्रगतिशील चित्र तैयार करे और देश की फिल्मी परम्पराओं को आगे बढ़ाये। कम्पनी का पुष्ट आर्थिक आधार अनुभवी कलाकारों और नौसिखुआ अभिनेताओं को यह विश्वास देता है कि जर्मन फिल्में बराबर तरक्की करती रहेंगी और पिछले बारह बर्षों के अनुभवों तथा समाजवादी राज्य की सफलताओं के आधार पर वे निरन्तर प्रगति पथ पर आरूढ़ रहेंगी।

युग प्रवर्तक आधुनिक नाटककार

बर्टोल्ट ब्रेख्त

एक पत्रकार

कवि तथा मंच-निर्देशक के रूप में ब्रेख्त के विकास के चार विभिन्न काल हैं : सन १९३३ का काल, देश से निर्वासन का काल, निर्वासन से फिर देश वापसी के बाद के आरम्भिक वर्ष, जिसका उत्कर्ष रूप 'बर्लिनर एन्सेम्बल' (बर्लिनर कला-मंडल) की स्थापना में प्रतिफलित हुआ, और अन्तिम है उसके आकस्मिक निधन का काल। उसकी नाट्य-रचनाओं और जर्मनी तथा विदेशों में उन रचनाओं के मंचीय प्रस्तुतीकरण में इन कालों की छाप स्पष्ट रूप में झलकती है। अपनी कविताओं तथा साहित्यिक कृतियों में, आग्सबर्ग के बुर्जुआ परिवार में उत्पन्न इस पुत्र ने अधिकाधिक खुले रूप में अपने परिवार के सामाजिक वर्ग से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है; और उसने अपने पैने व्यंग, अन्योक्तियों, वक्रोक्तियों तथा चुभनशील चोटों के चाबुक से इस वर्ग की खूब खबर ली है। यह वास्तव में एक ऐसा कवि है, जो स्वयं हंसने तथा हंसाने की कला जानता था।

ब्रेख्त के प्रारम्भिक नाटक हैं,"लेबेन एडुआर्डस डीस ज्वेतेन वोन इंग्लैंड" (मारलोवे के बाद), और "बाल" नामक नाटक। इस नाटक के विषय में लिखते हुए अक्तूबर, १९२५ में नाट्य-पत्रिका 'प्रीमियर' ने इसे "असाधारण प्रतिभा (जीनियस) की एक चोट" बताया था।

परन्तु प्रारम्भिक कृतियों में किसी को भी ऐसा नहीं कहा जा सकता जो उत्साह का तूफान जैसी चीज पैदा कर सकती। इनमें में कोई कृति विशाल जनता के विभिन्न वर्गों द्वारा समर्थित सर्वांगीण तथा चिरप्रभावशाली रूप में उतनी

सफल नहीं बन सकी, जितनी कि अगस्त १६२८ में बर्लिन के थियेटर में प्रदर्शित "तीन पेनी ऑपेरा"। यह कृति ब्रेख्त द्वारा किया गया दो सौ वर्ष पुरानी जौनगे की रचना का रूपान्तर था। इसकी संगीत रचना संगीतकार कर्टवैल ने की थी और एरिख एंगिल इस कृति के सहनिर्माता थे, जो आज भी "बर्लिनर एन्सेम्बल"के कला-परामर्शदाता हैं। बार-बार मंच पर बुलाकर दर्शकों ने तालियों की तुमुलध्वनि के साथ लेखक, संगीतकार, सह-निर्माता और कलाकारों का सम्मान किया था। इसमें भाग लेने वाले मुख्य अभिनेता तथा अभिनेत्री थे : एरिख पोन्टो (पीचम), कर्ट गेरोन (ब्राउन), हैरेल्ड पौलसन (मैक दि नाइफ) रोमा बाह्न (पौली), रोजाबेलेही (श्रीमती पीचम); लोट्टे लेन्जास (पायरेट-जैनी)। यह कृति प्रगतिशील मंच की अभूतपूर्व विजय थी। ब्रेख्त तथा वील का "तीन पेनी ऑपेरा" बर्लिन से दुनिया भर में दर्शकों से खचाखच नाट्यशालाओं में खेला गया। सन १६३३ में ब्रेख्त और उसके परिवार को जर्मनी छोड़ देने के लिए बाध्य होना पड़ा। वह जहां कहीं भी गया, उसने हिटलर तथा उन शक्तियों के विरुद्ध अपने संघर्ष को कभी नहीं छोड़ा, जिनकी सहायता से फ़ासिज्म सत्ता में आया था।

निर्वासन काल में भी बर्टोल्ट ब्रेख्त ने कभी अपना काम नहीं छोड़ा। उसने गीत लिखे, स्वेन्डबर्ग और चीनी कविताओं का रूपान्तर किया, और काफी मात्रा में गद्य—साहित्य तथा निबन्धों की रचना की। मंच पर ब्रेख्त के निबन्धों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने मंच-शिल्प के आधुनिक तथा प्रगतिशील विकास पर प्रेरणात्मक प्रभाव डाला है।

सन् १६४८ में तथा उसके बाद, अभिनेता, गायक तथा बर्लिन के मित्र अर्नेस्ट बुश ने कितने ही अवसरों पर ब्रेख्त की कविताओं तथा गीतों को प्रस्तुत किया है। इसके बाद 'मां का साहस' के उद्घाटन की, एक मंच-घटना के रूप में, उत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षा की जा रही थी।

आखिरकार जब यवनिका उठी, तब आश्चर्यचकित दर्शकों के सामने आधा उठा हुआ परदा प्रकट हुआ, जिस पर परिचय का संक्षिप्त शीर्षक उद्धृत था, जिसमें १६वीं शताब्दी में युद्ध के आरम्भिक ३० वर्षों की आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों का चित्र पेश करते हुए समय, स्थान तथा घटनाओं को अंकित किया गया था।

"तीस वर्षों तक निरन्तर चलता रहने वाला युद्ध. आम जनता की थकान तथा ऊब के कारण समाप्त हो गया"—यह मार्क्सवादी इतिहासकार एफ. मेहरिंग के शब्द थे, जो इस समय परदे पर अंकित किये गये थे।

"माता का साहस और उसके बच्चे" सन् १९४९ से कभी भी 'बर्लिनर एन्सेम्बल' के भंडार से अलग नहीं हो पाया है। यद्यपि यह नाटक २५० से भी अधिक बार दिखाया जा चुका है, परन्तु अब भी जनता के लिए अपार आकर्षक बना हुआ है।

इसकी सफलता तो वास्तव में इस बात में आंकी जानी चाहिए कि व्यक्ति-व्यक्ति से प्राप्त रकम ने एक सामूहिक रूप में पारस्परिक सहयोग पर आधारित और 'मच' से सम्बन्धित 'सर्वजनहिताय' के विचारों से अनुशासित 'कलामंडल' की रूप-रचना में योगदान दिया। वास्तव में यह कलामंडल ही एक ऐसी संस्था थी, जो ब्रेख्त के स्वप्नों को साकार कर सकती थी। ब्रेख्त का 'लक्ष्य' था कि कला-मंडल के समस्त प्रयत्नों का उद्देश्य मजदूर वर्ग का हित-साधन बने, उन्हें सोचने के लिए ऐसी सामग्री दे जो समाज के ढांचे में परिवर्तन ला सके।

यह विचारधारा समाज के प्रति ब्रेख्त और उसके कलामंडल के रुझान को प्रतिबिम्बित करने के साथसाथ उसका स्पष्टीकरण भी करती है। पहले प्रदर्शन से ही यह बात स्पष्ट हो गयी थी कि ब्रेख्त और उनका कलामंडल समाजवादी तथा मानवीय भावनाओं के समर्थक हैं, जिनका प्रतिनिधित्व आज जर्मन जनवादी गणराज्य करता है।

सन् १९५२ में ब्रेख्त द्वारा गेटे के 'फास्ट' के प्रस्तुतीकरण ने 'कलामंडल' की प्रसिद्धि में चार चांद लगा दिये। प्रारम्भ इतना प्रभावशाली था कि दर्शक मंत्रमुग्ध हो गये। चरित्रों को ऐसे नये, मौलिक तथा आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया गया, जैसे इससे पहले कभी नहीं हुआ था। नये चेहरों से ऐसा अनूठा काम लिया गया कि दर्शक दंग रह गये।

इस प्रदर्शन ने एक तहलका मचा दिया। इसलिए नहीं कि ब्रेख्त को अपने नये सिद्धान्त को कसौटी पर रखने का अवसर मिला था। यह पूरा नाटक कार्ल वान एप्पेन के परामर्श तथा सुझावों के अनुसार प्रस्तुत किया गया था। इसमें चिपकी तथा कसी हुई अर्ध–नकाबों, भारी-भरकम मीनारनुमा ज़िरह-बख्तरों, लम्बे-चौड़े लोहे के कनटोपों, दाढ़ियों आदि का प्रयोग बहुत ही विचार-पूर्वक तथा इस प्रकार किया गया था कि विषय-वस्तु तथा पात्रों को सोद्देश्य वास्तविकता के साथ प्रस्तुत किया जा सके।

कला-मंडल की अभिनय-दक्षता की सराहना विशेष रूप से की गयी। ऐसे सुन्दर अभिनय के लिए मंचप्रेमी जनता तथा मंच-समालोचकों की आखें मुद्दत से तरस रही थीं। यह सफलता सामूहिक तथा व्यक्तिगत रूप में अभिनेताओं द्वारा बहुत ही कड़े अभ्यास के फलस्वरूप प्राप्त हुई थी। छोटी से छोटी बात पर पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता था। एक-एक मुद्रा तथा भाव-भंगिमा पर

पहले से ही बारीकी के साथ अध्ययन किया जाता था, ताकि भूमिका में मूल पात्र वास्तविक तथा प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त हो सके।

इस भव्य प्रदर्शन ने यथार्थवादी नाट्य-कला की विजय का झंडा गाड़ दिया, और साथ ही इसके श्रमजीवी वर्ग की हित साधना भी की। यह नाटक आज भी कला-मंडली के नाटक भंडार का जाज्वल्यमान रत्न है।

सन् १९५५ में 'बर्लिनर कला-मडली' ने जॉर्ज फ़ार्कुहार की रचना "भरती अफसर" को अपने मौलिक रूप में 'शहनाई और ढोल' के नाम से मंच पर प्रस्तुत किया। इसके निर्माता थे बेन्नोबेसन। इस नाटक की साज-सज्जा और पोशाक बहुत ही सादी, रुचिकर तथा आकर्षक थी, जिनमें कार्लवान एप्पन ने १८वीं शती के कार्टूनों की यादगार की हल्की सी झलक प्रदान कर दी थी। जहां कहीं भी 'शहनाई और ढोल' प्रदर्शित हुआ, विदेशों में अथवा कला-मडली के अपने मंच पर, दर्शकों की मोदपूर्ण हंसी ने इसका खुलकर स्वागत किया।

दो वर्ष बाद इस कला-मंडली ने पेरिस में होने वाले "अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य कला समारोह" में भाग लिया और १९५६ में लन्दन में तीन सप्ताह के कार्य-क्रम की तैयारियां पूरी कीं। थियेटर के नोटिस बोर्ड पर ये पंक्तियां थीं :

लन्दन में प्रदर्शनी के विषय में

"लन्दन के बारे में दो बातों का ख्याल रखना चाहिए। सबसे पहली बात तो यह है कि हम वहां अधिकांश दर्शकों के लिए, जो जर्मन नहीं जानते, केवल एक मूक-अभिनय ही प्रस्तुत कर सकेंगे, जो मच पर एक मूक-चलचित्र के समान होगा। (पेरिस में हम ऐसी जनता के सामने अपने प्रदर्शन कर रहे थे, जो अन्तर्राष्ट्रीय जनता थी और फिर वहाँ हमारा प्रवास कुछ दिनों तक सीमित था) दूसरी बात यह कि इंग्लैंड निवासियों में जर्मन-कला (साहित्य, चित्रकारी, संगीत) के सम्बन्ध में यह पुरानी धारणा चली आ रही है कि वह अत्यन्त भारी, धीमी, उबा देने वाली और सुस्त रफ्तार वाली होती है। इसलिए हमें वहां तेज, हल्का, मजबूत अभिनय प्रस्तुत करना है। यह दौड़ने का प्रश्न नहीं है, बल्कि रफ्तार बढ़ाने का प्रश्न है, हमें केवल तेज खेलना ही नहीं, बल्कि तेजी के साथ सोचना भी पड़ेगा। हमें अपने अभ्यासों की रफ्तार तेज रखनी चाहिए, हर समय अपने प्रदर्शन में हमें लाक्षणिक रूप में मज़बूती बढानी चाहिए, और अपनी चतुराई का उपयोग करना चाहिए। संवाद झिझक के साथ नहीं आने चाहिएं, जैसे कि आप किसी को अपनी जूतों की आखिरी जोड़ी पेश कर रहे हों; संवाद इस तरह इधर-उधर फेंके जाने चाहिएं, जैसे खेल

में गेंदों को फेंका जाता है। दर्शक-मंडली को यह आभास कराना चाहिए कि बहुत से कलाकार कार्य कर रहे हैं, वे एक टीम (मंडल) के रूप में जुड़े हुए हैं, और वे सब मिलकर कहानियां, विचार और चतुराई भरे करतब दर्शकों को दिखा रहे है। तुम्हारे प्रयत्नों के लिए मेरी शुभ-कामनाएं।"

५ अगस्त, १९५६
हस्ताक्षर : (ब्रेख्त)

६ अगस्त, १९५६ को "बर्लिनर कला-मंडली" के प्रत्येक सदस्य को, जिन्हें लन्दन में प्रस्तुत किये जाने वाले कार्यक्रम में भाग लेने के लिए चुना गया था, ब्रेख्त के पत्र की प्रति दे दी गयी। जर्मन कवि बर्टोल्ट ब्रेख्त का अपने सह-कर्मियों के नाम यह अन्तिम पत्र था। १४ अगस्त को दिल के दौरे ने ब्रेख्त को हमेशा के लिए हमसे जुदा कर दिया।

"गूटे अर्बिट !".........ब्रेख्त के यह अन्तिम नसीहत तथा शुभकामना के शब्द थे; बर्लिनर कला-मंडली के अभिनेता, अभिनेत्रियों के नाम, टेक्नीकल स्टाफ के मेम्बरों और चित्रकारों के नाम, शिल्पियों, संगीतकारों, प्रकाश-सज्जाकारों, मंच-व्यवस्थापकों, प्रोम्प्टरों, फोरमैनों और दृश्य-परिवर्तकों के नाम। उन्होंने ब्रेख्त की आखिरी इच्छा पूरी की।

ब्रेख्त की इच्छा थी कि जिस प्रकार उसने सीधा-सादा जीवन-यापन किया था, उसी प्रकार बिना किसी शोर-शराबे के, बिना शानदार-धुंआंधार भाषणों तथा बिना किसी राजसी एवं शासकीय औपचारिकता के उसे दफना दिया जाये। वह चाहता था कि उसे 'चौस्सेट्रेस्सी' के एक छोटे से पुराने कब्रिस्तान में दफ़न किया जाये, जो उसके बर्लिन-निवास स्थान से दीख पड़ता है, और उस के थियेटर के समीप है; यूं कहना चाहिए कि वह उन लोगों के ही बीच में रहना चाहता था, जो उसकी नाटक देखने के लिए आते थे। उसकी अन्तिम वसीयत का पूरा सम्मान किया गया, जो लिखित रूप में जर्मन जनवादी गणराज्य की कला-अकादमी में सुरक्षित है। उस महान कवि के सम्मान में श्रद्धांजलि अर्पित करने आनेवाली जनता की दिन-दिन बढ़ती हुई भीड़ ने कब्रिस्तान की दीवार को तीर्थ स्थान बना दिया है।

"अलविदा, बर्ट ब्रेख्त, हम तुम्हें प्यार करते हैं, हम सभी...!"

●

कहानी

बूढ़ा ब्लाशेक

वरनर ब्रोनिग

बूढ़ा ब्लाशेक अर्जगेबिरगे का एक किसान था. पुराने ढंग का । कम से कम गांव वाले उसे ऐसा ही समझते थे । अपने घर के सामने खड़े नीबू के वृक्ष के समान वह भी ऋतुओं की चोटें खाये हुए था, अपनी जन्मदात्री पथरीली भूमि की तरह कठोर और अपने सूखे-साखे पीले बैल के समान जिद्दी—यह था ब्लाशेक, जो साल के शुरू से लेकर आखिर तक, पौफटे से लेकर झुटपुटा होने तक अपने छोटे-छोटे आड़े-तिरछे खेतों में खटता रहता था । उसकी बैठक की दीवार पर एक आदर्श-वाक्य मोतिया कढ़ाई में शीशे में मढ़ा लटका हुआ था, जिसे उसकी स्वर्गीया पत्नी वसीयत के रूप में छोड़ गयी थी ; यह वाक्य था, "जो मेरा है, वह मेरा ही है ; यद्यपि वह कुछ अधिक नहीं है ।" यही आदर्श-वाक्य वह ढाँचा था, जिसमें ब्लाशेक ने हमेशा अपने जीवन को ढालने का प्रयत्न किया था । उसके घर के पीछे उसकी तेरह एकड़ जमीन, तीन गाएं, चार सुअर, सोलह मुर्गी के चूजे—यही सब कुछ उसकी सम्पत्ति थी ।

फिर भी ब्लाशेक की दुनिया में एक ऐसी चीज थी जो ऋतुओं के आवा-गमन, फसल और पशुधन की अपेक्षा उसके लिए कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी—वह थी 'हेल्गा'—उसकी पुत्री । हेल्गा से उसे बहुत गहरा आत्मिक लगाव था । उसे हेल्गा से इतना प्यार था, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था ।

आज हेल्गा की बीसवीं वर्षगांठ थी, जो वास्तव में एक स्मरणीय दिवस था । दोनों दोपहर का भोजन कर चुके थे । ब्लाशेक ने दाढ़ी बनानी शुरू की, जो स्वयं अपने में एक घटना थी, क्योंकि ब्लाशेक केवल ईस्टर और क्रिसमस के

दिन ही दाढ़ी बनाता था। ब्लेड की प्रत्येक रगड़ के साथ उसका नया चेहरा उभरता सा दीख पड़ता था, हालांकि उसमें बहुत सी रेखाएं और झुर्रियाँ वर्षों के कड़े और घने परिश्रम की कहानियाँ कह रही थीं। यकायक ऐसा मालूम होने लगा जैसे वह बूढ़ा नहीं रह गया है। बढ़ी हुई दाढ़ी से छुटकारा पाकर वह पचास वर्ष से अधिक का नहीं लगता था, जो वास्तव में वह था भी।

एक और अजीब घटना घटी। हेल्गा ने मजाक करते हुए उससे अपने साथ क्लबघर में चलने और शाम वहीं बिताने के लिए कहा। यह क्लबघर मशीन ट्रैक्टर कर्मचारियों के लिए था। ब्लाशेक अपनी दाढ़ी पर ब्लेड की खरोंच पर कागज का टुकड़ा चिपकाते हुए "नई अजीब दुनिया और पेट्रोल के घोड़ों" के बारे कुछ बुदबुदाया—और हेल्गा के साथ चलने की स्वीकृति दे दी। हेल्गा द्वारा मोटर ट्रैक्टर स्टेशन की प्रशंसा, ब्लाशेक के लिए ऐसा ही था, जैसे सांड को लाल कपड़ा दिखाना।

कुछ घंटे बाद ब्लाशेक मोटर-ट्रैक्टर स्टेशन के क्लब में एक मेज पर बैठा बीयर की चुस्कियां ले रहा था, और हेल्गा को हैन्स बुशमान की, जिसने जनवादी सीमा पुलिस की वर्दी पहन रक्खी थी, बाहों में 'वाल्ट्ज' नृत्य करते हुए देख रहा था। जहाँ तक हेल्गा का प्रश्न है, वह कोई विशेष सुन्दर नहीं कही जा सकती थी। उसकी टांगे कुछ कम लम्बी और हाथ कुछ लटके हुए से थे। वह एक ऐसी लड़की थी जिसकी ओर कोई विशेष ध्यान नहीं देता था, और वह स्वयं अपनी शरीर रचना सम्बन्धी कमियों के प्रति जागरुक थी। हालांकि इस समय वह दूसरी लड़कियों के समान ही नृत्य कर रही थी, और किसी को भी उसमें कुछ अजीबपन नजर नहीं आता था। और यदि कोई उसे जरा निकट से देखने की तकलीफ गंवारा करता, तो उसे मालूम होता कि उसके पास एक सुन्दर सी मुस्कान है, जो जीवन से भरपूर है।

अकार्डियन-वादक ने अपने वाद्य-यन्त्र का स्वर बदला, ढोल-वादक ने एक लम्बी ताल देना शुरू किया, कितनी ही जोड़ों की आखिरी थिरकनों के साथ-साथ वाल्ट्ज नृत्य मध्यम पड़ता गया। हेन्स हेल्गा को लेकर उसकी मेज पर आया।

"यदि आपको आपत्ति न हो तो क्या कुछ देर के लिए मैं आपके साथ बैठ सकता हूँ?" हेन्स ने पूछा। ब्लाशेक ने एक घूंट और भरी, आती जंभाई को रोका और स्वीकृति सूचक गर्दन हिलाते हुए कहा: "हाँ-हाँ नौजवान, जरूर बैठो; मुझे कोई आपत्ति नहीं।" ब्लाशेक ने नीली धारी वाले मेजपोश पर रेंगती हुई मक्खी को घूरते हुए सोचा, लड़का तो बुरा नहीं है। जरा इकहरे बदन का है, जैसे कि शहरी लोग आम तौर पर होते हैं। उसने ऊंचे स्वर में

पूछा : "क्या मुझे बता सकोगे कि पुलिस में भरती होने से पहले तुम क्या थे ?"

हेन्स ने नजर ऊपर को उठाई ।

"एक किसान"—उसने उत्तर दिया ।

"किसान !"

"जी हाँ !"

"हूँ......।"

ब्लाशेक ने अपनी ठोड़ी खुजाई। एक किसान का पूत और इतना दुबला-पतला ! शायद किसी धनी किसान का मालूम होता है, वरना इसके हाथ कुछ अलग ही अन्दाज के होते । हेल्गा, कुछ भी हो, उसकी नाक कितनी सुन्दर है । वह हमेशा इस तरह खड़ी रहती है— कि हेल्गा अच्छी खासी चुहिया की तरह फुदकती दिखाई देती है ।

ब्लाशेक ने अपना गिलास हेन्स की ओर उठाते हुए कहा :

"तुम मुझे मैक्स कह कर पुकार सकते हो," उसने ऊंची आवाज में पुकारा।

हेन्स ने टटोल कर अपनी जेब से सिगरेट का एक पैकेट निकाला, और ब्लाशेक की ओर बढ़ा दिया । कुछ देर वे खामोशी के साथ सिगरेट पीते रहे । फिर ब्लाशेक ने छूटे सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए पूछा, "तुम्हारे पास कितनी जमीन है ?"

हेन्स ने हंसकर उत्तर दिया, "जी, फिलहाल कितनी है, यह तो मैं ठीक-ठीक नहीं बता सकता ।"

यह भी खूब रही—ब्लाशेक ने सोचा और सिलसिला जारी रखते हुए पूछा :

"पचास एकड़ ?"

"जी नहीं, मेरे ख्याल से इससे कुछ ज्यादा है," हेन्स ने उत्तर दिया।

"साठ ?"

"जी, कम से कम भी लगाया जाय तो कोई १७०० एकड़ के अरीब-करीब होगी ।"

हेन्स ने सकुचाते हुए उत्तर दिया ।

ब्लाशेक ने मेज पर हथेली मारते हुए कहा, "बस बहुत हो चुका । अब तुम मुझे और ज्यादा मूर्ख नहीं बना सकते ।"

हेन्स कुछ अपमानित सा हो उठा था । "यदि आपको विश्वास नहीं होता, तो मैं अपने कथन को सिद्ध कर सकता हूँ ।"

ब्लाशेक ने अपनी पुत्री की ओर ध्यान पूर्वक देखा ओर फिर हेन्स की ओर देखते हुए बोला, "तुम्हारी इतनी भूमि अब भी है, नौजवान ! इस पैमाने की

व्यक्तिगत जागीरें यहाँ समाप्त हो चुकी हैं ; अथवा तुम किसी कृषि-उत्पादक सहकारी संस्था से सम्बन्ध रखते हो ?"

यह कोई कृषि-उत्पादक सहकारी संस्था नहीं थी। जब हेन्स ने पूरा मामला समझाया तो ब्लाशेक को मालूम हुआ कि वह एक राज्यीय कृषि-फार्म था। उसे अपने ऊपर बहुत झुंझलाहट हो रही थी और अपने को कोस रहा था कि वह इतना मूर्ख साबित हुआ कि इतनी जरा सी बात भी नहीं समझ सका। किन्तु कुछ मिनट बाद ही उसकी उत्सुकता ने उसका रुख सुधार दिया। अब वह जानना चाहता था :

"तुम्हारे पिता क्या करते हैं ?"

"वह पूरे फार्म की व्यवस्था की देख-रेख करते हैं।"

"निरीक्षक के रूप में ?"

"जी नहीं, व्यवस्थापक के रूप में।"

व्यवस्थापक—एक बड़ा मोर्चा मारा है। ब्लाशेक आराम करने के अन्दाज में कुर्सी पर पीछे की ओर झुक कर बैठ गया। उसे सन्तोष था कि उसे पूरी तरह मूर्ख नहीं बनाया गया था। इस बीच हेन्स कम्बाइन-ड्राइवर की हैसियत से अपने काम के बारे में बातचीत करता रहा। उसने बताया कि स्वयंसेवक पुलिस में उसकी सेवाओं की अवधि अब फसल के आरम्भ तक समाप्त होने वाली है। वह हर चीज के बारे में काफी उत्साह के साथ बतला रहा था, और हेल्गा उसका प्रत्येक शब्द पी रही थी। ब्लाशेक अपने ही विचारों में डूबा हुआ था। वह व्यवस्थापक पिता के बारे में उलझा हुआ था। और व्यवस्थापक पिता के इस दुबले-पतले पुत्र ने हेल्गा को ही अपने साथ नाचने को छाँटा था। अविश्वसनीय ! दो युवा हृदयों के बीच प्यारसिंचित दृष्टि के आदान-प्रदान से उसने अनुमान लगा लिया था कि इनका यह सिलसिला काफी दिनों से चलता रहा था। ब्लाशेक को यह लड़का कैसेनोवा से भिन्न, कुछ और नजर आ रहा था। जहाँ तक लड़की का प्रश्न है, वह स्वयं उसके लिए कभी भी साक्षी बन सकता था। कितनी अजीब दुनिया है ! ब्लाशेक ने पूछ-ताछ जारी रखी।

"तुम्हारे पिता क्या काम करते थे, मेरा मतलब है वे राजकीय कृषि फार्म के व्यवस्थापक होने से पहले क्या थे ?"

हेन्स गायों के लिए नये घर के सम्बन्ध में हेल्गा को बता रहा था, और हेल्गा दत्त-चित्त होकर सुन रही थी। उसकी छोटी-छोटी आंखें थिरक रही थीं। ब्लाशेक के प्रश्न ने हेन्स की बातचीत में बाधा डाली। एक क्षण के लिए हेन्स ने ब्लाशेक की ओर देखा। अखिर यह बूढ़ा किस नतीजे पर पहुँचना चाहता है ? फिर उसने उत्तर दिया :

"पिताजी गाड़ी में माल ढोने का काम करते थे। इसके अलावा लगभग १३ एकड़ का एक छोटा सा जमीन का टुकड़ा था, तीन गायें, एक जोड़ा सुअर और कुछ मुर्गी के बच्चे वगैरा, जैसा कि इस परिवर्तन से पहले हुआ करता था, आप जानते ही हैं...।"

ब्लाशेक ने आरम्भ से विचार करना शुरू किया। हेन्स ने बताया, १३ एकड़ जमीन, तीन गायें। फिर उसने अपनी १३ एकड़ पथरीली जमीन के बारे में सोचा। कुछ और चीज भी वह सोच रहा था। "जैसा कि पहले...... हुआ करता था", हेन्स ही तो कह रहा था। उसके पिता ने और उसने जिन्दगी का नया पृष्ठ आरम्भ किया, और कभी का गरीब माल ढोने वाला, आज राज्यीय कृषि फार्म का व्यवस्थापक है...।

वाद्य-मंडली ने वे लोकप्रिय धुनें बजानी शुरू की, जिन्हें ब्लाशेक कभी भी सहन नहीं कर सकता था। लेकिन वह उस तरफ से बिलकुल बेखबर था। हेल्गा और हेन्स निरन्तर नाच रहे थे और नाचते ही जा रहे थे। किसान ब्लाशेक बैठा था और बैठा ही रहा। स्टेशन के ट्रैक्टर ड्राइवर, जो उससे परिचित थे, को विश्वास था कि वह हमेशा की ही तरह भुलक्कड़ और भोला आदमी है। हेन्स ने दरअसल उससे बात करने की कोशिश दो बार की। लेकिन हेल्गा ने उसके बाजू को अपने हाथ से दबाते हुए उसे यह कह कर रोक दिया, "हेन्स, कृपया उन्हें कुछ देर के लिए अकेला छोड़ दो।"

आखिर-कार ब्लाशेक उठकर खड़ा हो गया। अविश्वास भरी हंसी हंसते हुए उसने धीरे से कहा :

"अच्छा, खुश रहो मेरे बच्चो। मुझे अब चलना है और गायों को अंदर बांधना है। तुम भी ज्यादा देर यहां मत ठहरना..."

वह तीन चार कदम आगे बढ़ा, फिर रुका और और अपने कंधे से पीछे गरदन घुमाकर हेन्स को सम्बोधित करते हुए कहा : "मैं तो बिलकुल भूल ही गया था। हेन्स, यदि तुम मुझसे बातचीत करने के लिए आना चाहो तो जरूर आना; मुझे खुशी होगी।"

वह भारी कदमों से नाचघर को लांघकर दरवाजे की ओर बढ़ा, और घर की ओर चल दिया...।

क्रिस्ता स्टूबनिक (दायें) श्रौर जीसेला बिर्क मेयेर (बायें)
ज. ज. ग. की प्रमुख महिला खिलाड़ी

हमारे सर्वोच्च खिलाड़ी

जोशिम फायबेलकोर्न

सभी देशों में यह रिवाज है कि हर वर्ष ऐसे खिलाड़ी को छांटा जाय जिसने उस वर्ष के अन्दर सबसे बड़ी, सबसे मूल्यवान तथा सबसे अधिक सफलताओं को प्राप्त किया है और उसे "इस वर्ष के खिलाड़ी" की उपाधि दी जाय। समाचार पत्र, साधारण जन और स्वयं खिलाड़ी इस जांच-पड़ताल में हिस्सा लेते हैं और हर बार इस जांच का नया नतीजा निकलता है। लेकिन कई वर्षों से ज. ज. ग. में "इस वर्ष के खिलाड़ी" की जांच के सम्बन्ध में कोई विचित्र अथवा अदभुत बात नहीं हुई। पहले ही लोग जानते थे कि इस वर्ष भी गुस्टाव एडल्फ शुर को सबसे लोकप्रिय खिलाड़ी माना जायेगा।

गुस्टाव एडल्फ शुर

यह आकस्मिक बात नहीं है कि १९५८-५९ में दो बार साइकिलों की दौड़ में चैम्पियन बनने वाला तथा दो बार साइकिलों की दौड़ में शांति पुरस्कार पाने वाला गुस्टाव शुर हमारे देश की जनता से इतना सम्मान व प्रेम पाता है। यह सम्मान व यह प्रेम इस २८ वर्षीय युवक की पिछले नौ वर्षों की सफललताओं का नतीजा है। साइकिलों की दौड़ में दुनिया में किसी को इतना सम्मान नहीं मिला जितना कि उसे। १९५८-५९ में दो बार वह दुनिया में साइकिल दौड़ में सर्वप्रिथम आया, १९५८ व १९५९ में दो बार वह विश्व शांति साइकिल दौड़ों में सबसे आगे रहा। १९५४ से १९५९ तक चार बार वह ज. ज. ग. में साइकिल चैम्पियन रहा, १९५४ में दुनिया भर के विद्यार्थी साइकिल सवारों में वह सबसे आगे रहा, १९५३-५४ और १९५९ में तीन बार उसने ज. ज. ग. का दौरा करने के लिए पुरस्कार पाया और १९५६ के ओलेम्पिक खेलों में साइकिल सवारी के लिए उसे ताँबे का तमगा मिला।

लेकिन इतना ही नहीं, देशवासी उसे प्रेम से "टेव" कहते हैं। १९५० से हर वर्ष बर्लिन-वारसा-प्राग की सड़क पर विश्व शांति साइकिल दौड़ होती है। टेव हर वर्ष उस में भाग लेता है। गैर-पेशेवर साइकिल सवारों की यह दुनिया में सबसे लम्बी दौड़ है। करोड़ों आदमी इसे देखते हैं और साइकिल सवारों को तालियां बजाकर प्रोत्साहित करते हैं तथा उनकी सफलताओं से स्वयं खुश होते हैं। टेव ने न केवल अपने लिए दो बार सर्वप्रथम पुरस्कार प्राप्त किया, बल्कि दो बार वह अपने देश की विजयी टीम का कैप्टन रह चुका है। भला तब वह क्यों न इतना अधिक लोकप्रिय हो। एक और बात उल्लेखनीय है। वह उन खिलाड़ियों में नहीं हैं जो खेल-कूद को ही दुनिया में सब कुछ मानते हैं। वह जानता हैं कि शांति रहने पर ही वह साइकिल सवारी कर सकता है; वह यह भी जानता है कि ज. ज. ग. के मजदूर अपने काम से उन सुविधाओं का निर्माण करते हैं जिनके अन्तर्गत उसके लिए अपनी योग्यताओं का विकास करना संभव हो पाया है। इसलिए टेव, जिसने इसी वर्ष खेल-कूद के अध्यापक का डिप्लोमा प्राप्त किया है, अपना फालतू समय ज. ज. ग. के युवक संगठन के काम-काज में लगाता है। इस संगठन ने ज. ज. ग. की लोकसभा की सदस्यता के लिए अपना टिकट देकर उसे जनता का प्रतिनिधि चुना है।

वह मजदूर का बेटा है और उस वर्ग की पार्टी का सदस्य है। इस हैसियत और लोकसभा के सदस्य की हैसियत से वह ज. ज. ग. में समाजवादी रचना के निर्माण का कार्य पूरा कर रहा है। उसे ज. ज. ग. की सरकार ने "राष्ट्रीय सफलता" का चाँदी का पदक प्रदान किया है और जनवादी युवकों के विश्व संघ ने उसे "शांति-योद्धा" की उपाधि दी है। जर्मनी की खेल-कूद सम्बन्धी सर्वोच्च संस्था ने उसे "अर्नस्ट ग्रूब तमगा" दिया। वह तमाम सफलताओं के बाद भी एक सीधा-सादा, हंसमुख और सुशील नौजवान है जो अपने साथियों का दोस्त है और सबकी भलाई को अपने स्वार्थ से अधिक बड़ा मानता है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए यह समझ में आ जाता है कि वह क्यों सबसे लोकप्रिय खिलाड़ी माना जाता है।

हेलमेट रेकनागेल

बरफ पर कूदने वालों को साहसी कहा जाता है। बात ठीक भी है। ऊपर की चोटी से सौ मीटर या अधिक नीचे बरफीली घाटी में कूदना-एक प्रकार से हवा में उड़ने की तरह है और इसके लिए अवश्य ही साहस की आवश्यकता होती है। बरफ में कूदने वाले साहसी लोगों में एक २२ वर्षीय पुर्जा बनाने वाला नौजवान हेलमेट रेकनागेल है। वह स्टाइनबाक-हैलेनबर्ग का निवासी है।

उसके साहस की लोग मिसाल दिया करते हैं। आजकल वह टैकनिशियन के इम्तहान के लिए तैयारी कर रहा है। साथ ही १९६० के जाड़ों में होने वाली स्क्वा वैली ओलेम्पिक कूद के लिए वह बराबर तैयारी कर रहा है। बरफ में कूदने वाले इस प्रसिद्ध खिलाड़ी का किसी सप्ताह का कार्यक्रम बता सकना एक कठिन काम है। एक तरफ तो काम व पढ़ाई और दूसरी तरफ खेल-कूद का शौक। लेकिन इतना ही हो तो कोई बात नहीं। घर पर योरोप तथा समुद्र पार के देशों से आने वाले बहुत से पत्र उसका इन्तजार करते रहते हैं। इन पत्रों में सवाल होते हैं, उसके हस्ताक्षरों के लिए निवेदन होते हैं, विभिन्न स्थानों पर आयोजित खेल-कूद में भाग लेने के लिए बुलावे होते हैं, कुछ नहीं तो वैसे ही अलग-अलग जगहों से बुलावा होता है। उसे न केवल इन पत्रों का जवाब देना होता है, बल्कि मजदूरों व संगठनों के निमन्त्रणों पर जाना भी पड़ता है। वह निमन्त्रण अस्वीकार करना पसन्द नहीं करता। इसलिए इस हृष्टपुष्ट नौजवान से न केवल उसके वर्कशाप या खेल-कूद के मैदान में मिला जा सकता है, बल्कि ज. ज. ग. के विभिन्न भागों में युवक वाद-विवाद सम्मेलनों अथवा कारखाना सभाओं में भी उसे पाया जा सकता है। वह पश्चिमी जर्मनी में भी अक्सर मेहमान बनकर जाता रहता है। हाल में वह रूर क्षेत्र की राजधानी ऐसेन में नौजवान खिलाड़ियों व मजदूरों की एक सभा में भाषण देने व उनको जर्मनी के प्रथम मजदूर-किसान राज्य की सच्ची स्थिति बताने के लिए गया था। इसके अलावा भी बहुत सी चीजों में उसका ध्यान रहता है। फिर भी वह अपने पेशे में दक्षता पाने, पत्रों का जवाब देने तथा निमन्त्रणों के अनुसार मिलने-जुलने और आने-जाने के लिए समय निकाल लेता है। जहां तक खेल-कूद का सम्बन्ध है, वह सभी को अपने करतब दिखाता रहता है। १९५८ में फिनलैण्ड में लहटी नामक स्थान पर विश्व-चैम्पियनशिप में उसने तीसरा स्थान पाया। लेकिन उसी वर्ष होलमेनकोलेन की प्रतियोगिता में वह सर्वप्रथम रहा। १९५८ व १९५९ में "चार बार कूदने" की प्रतियोगिता, जिसमें आस्ट्रिया व पश्चिमी जर्मनी में चार बार कूदने पर निर्णय किया जाता है, वह सफल रहा और १९५९ में वह ज.ज. ग. का चैम्पियन घोषित किया गया।

उसकी सफलताओं की कहानी बहुत प्रभावोत्पादक है। उदाहरण के लिए, यूगोस्लाविया में प्लानिशया में बड़ी कूद होती है जिसमें वह सर्वप्रथम रहा। उसने दुनिया के लगभग सभी बरफ के बड़े कूदने वालों से मुकाबला किया है और उनको हराया है। इस सम्बन्ध में जो अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ हैं, उनमें से कई का मत है कि आगामी जाड़े के ओलेम्पिक खेलों में वह सर्वप्रथम रहेगा।

लेकिन देखें क्या होता है, क्योंकि ओलेम्पिक स्वर्ण पदक पाने के संबन्ध में यकीन के साथ कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। पर एक बात साफ है। जब वह स्क्वा घाटी में कूदता है, तो किसी के लिए उसे हरा सकना बड़ा ही मुश्किल काम है। वह अपनी तमाम योग्यता व साहस दिखाकर ज. ज. ग. के लिए विजय प्राप्त करेगा।

हैरमन, रिशजेनहैन, वैलनटीन

कई वर्षों से ज. ज. ग. राज्य के खिलाड़ी १५०० मीटर की दौड़ में विशेष महत्व प्राप्त कर रहे हैं। जो भी खेल-कूद में दिलचस्पी रखता है, जरूर ही सिगफ्रीड हैरमन तथा क्लौस रिशजेनहैन के बारे में जानता होगा। अब इन दोनों खिलाड़ियों का मुकाबला एक नये खिलाड़ी से है। मुकाबला मुश्किल है। यह खिलाड़ी है ज. ज. ग. की राष्ट्रीय जन-सेना का २२ वर्षीय लैफ्टीनेन्ट सिगफ्रीड वैलनटीन, जो वारवेरटस फौजी खेल-कूद क्लब की ओर से खेलता है। बहुत अर्से से हैरमन व रिशजेनहैन के सामने वह चमक नहीं पाता था। लेकिन १९५८ में समाजवादी देशों की सेनाओं की खेल-प्रतियोगिता में उसने स्टानिसला जुंगवर्थ को हराकर यह दिखा दिया कि अब वह नौसिखुआ नहीं रहा। १९५९ के खेल-कूद को पूरा हुए तीन महीने भी नहीं हुए थे कि वह आठ सौ से दो हजार मीटर की दौड़ों में संसार में सबसे आगे रहने वालों में गिना जाने लगा। इतने थोड़े समय में इतनी सफलता पाने वाले खिलाड़ी बिरले ही होते हैं। लेकिन इतनी महान सफलताओं को पाकर भी वह घमंडी नहीं बना।

वह पानी के नल लगाने का काम करता है, जर्मन समाजवादी एकता पार्टी व स्वतन्त्र जर्मन युवक आन्दोलन का सदस्य है। वह फौज में इसलिए भर्ती हुआ कि वह समझता है कि जर्मनी के इस मजदूर-किसान राज्य की हिफाजत करना उसक[illegible]व्य है। आज उसकी गिनती दुनिया के सबसे अगुआ दौड़ने वालों में [illegible] है। जब बताया गया कि विशेषज्ञ समझते हैं कि वह ओलेम्पिक खेलों में प्रथम आयेगा, तो वह सीधे-सादे ढंग से बोला, "जीतने से पहले ही इनाम मैं नहीं बाँटता—यह न भूलो कि दूसरे खिलाड़ी भी हैं और वे भी किसी से पीछे रहने वाले नहीं हैं। लेकिन मैं प्रथम आने के लिए भरसक प्रयत्न करूंगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि हमारे देश की मजदूर जनता आशा करती है कि हम कोई कसर उठा नहीं रखेंगे।" यह जवाब आज नये जर्मनी के नौजवान खिलाड़ियों में से अधिक की मनोवृत्ति का परिचायक है।